25/-₹

हिन्दी साप्ताहिक

विश्वकर्मा किरण

वर्ष-20 अंक-25 जौनपुर 7 जुलाई, 2019 http://www.vishwakarmakiran.com

सरकारी सम्मानों से अब तक वंचित

विश्व के महानतम जादूगर

ओ0पी0 शर्मा

https://www.facebook.com/VishKiranNews/ https://twitter.com/VishKiranNews https://www.linkedin.com/in/vishkirannews/

Er. R.K. Sharma

9839043150
9415438554

Email: kumarfab@rediffmail.com

Kumar Construction & Engineers

Appro. Govt. 'A' Class Contractor Civil & Mechanical
Specialist in: Steel Building Construction
Deals in: Civil Sanitory, Electrical & Fabrication Erection

M.I.G. 'C'-759, 760, Barra-8, Kanpur-208027

Tel. (Off.): 022-25952102
Cell: 09821243732
09324092819

Balgovind Sharma (Bachhan)

VIJAY ENTERPRISES

Specialist In: Blow Moulds, Dies & Patterns

38, Shiva Estate, Next to Tata Power House
Lake Rode, Bhandup (W) Mumbai-400078
E-mail: blow.mould@hotmail.com

ShantiLal Gehlot
Mob.- 9819287799

Kailash
Mob.- 9773000649

Shiv Shakti Interior

*Interior
*Designer
*Consultant

B-150, Shahavi Colony 1st Flour Near Costom Shop
Navghar Road Mulund (E) Mumbai-400081
E-mail: shivshaktiinterior@gmail.com

R.N.I. No.- UPHIN/2000/01157
विश्वकर्मा किरण
हिन्दी साप्ताहिक पत्रिका

वर्ष-20 अंक-25
जौनपुर, 7 जुलाई, 2019
पृष्ठः 32 मूल्यः 25/- रूपया

प्रेरक
रघबीर सिंह जांगड़ा
मो0: 9416332222
*****
सम्पादक
कमलेश प्रताप विश्वकर्मा
मो0: 9454619328
*****
सह सम्पादक
विजय कुमार विश्वकर्मा
मो0: 8763834009
*****
सह सम्पादक
धीरज विश्वकर्मा
मो0: 9795164872
*****
समन्वय सम्पादक
शिवलाल सुथार
मो0: 8424846141
*****
मुम्बई ब्यूरो
इन्द्रकुमार विश्वकर्मा
मो0: 9892932429
*****
जौनपुर ब्यूरो
संजय विश्वकर्मा
मो0: 9415273179

-:सम्पर्क एवं प्रसार कार्यालयः-
डिजिटल प्वाइंट, कैपिटल बिल्डिंग
(भाजपा कार्यालय के सामने)
त्रिलोकनाथ रोड, हजरतगंज
लखनऊ। 226001

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक कमलेश प्रताप विश्वकर्मा द्वारा अजन्ता प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स, अहमद काम्प्लेक्स, गुईन रोड, अमीनाबाद, लखनऊ से मुद्रित एवं 98, नारायण निवास, नखास, सदर, जौनपुर से प्रकाशित।
सम्पादक- कमलेश प्रताप विश्वकर्मा

website: www.vishwakarmakiran.com
E-mail: news@vishwakarmakiran.com

-:मुख्य संरक्षकः-
विश्वकर्मा जागरूकता मिशन

सम्पादकीय...

कमलेश प्रताप विश्वकर्मा

दिवंगत शिक्षक विश्वनाथ विश्वकर्मा पर बनी फिल्म- पटरी पर पाठशाला

दिवंगत विश्वनाथ विश्वकर्मा

व्यक्ति रहे न रहे, यदि उसके कर्म अच्छे हैं तो वह हमेशा अमर रहेगा। ऐसे ही एक अमर व्यक्तित्व का नाम सामने है विश्वनाथ विश्वकर्मा। उनके दिवंगत होने के बाद भी शिक्षा क्षेत्र में किये गये योगदान के लिये लोग उन्हें याद कर रहे हैं। यहां तक कि उन पर एक फिल्म बनी है, जिसका नाम है 'पटरी पर पाठशाला।' चलंत विद्यालय के जनक, सह राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त शिक्षक विश्वनाथ विश्वकर्मा का सड़क हादसे में मौत हो गई।

विश्वनाथ विश्वकर्मा विराट व्यक्तित्व के धनी पुरुष थे, कर्मवीर थे। वह चलंत विद्यालय की परिकल्पना से देश-दुनिया में ख्याति अर्जित किये। वह गया और नवादा का सर ऊंचा कर गौरवान्वित किये थे। वह नवादा जिले के मिजार्पुर के निवासी थे। दिवंगत विश्वनाथ विश्वकर्मा ने वर्ष 1991 में चलंत विद्यालय की परिकल्पना रखी थी जो काफी मशहूर हुई। इस माध्यम से वे गरीबों, वंचितों में शिक्षा की अलख जगाते रहे। जाहिर हो कि गया-किऊल रेलगाड़ी में हाकरों को अक्षर ज्ञान कराने वाले विश्वनाथ विश्वकर्मा चलता-फिरता स्कूल की सकारात्मक परिकल्पना को साकार कर चल बसे।

वह अनगिनत निरक्षर को शिक्षित कर अक्षर ज्ञान की ताकत प्रदान किये। वह सिवान जिला शिक्षा पदाधिकारी पद से सेवानिवृत्त हुए थे। अपनी उत्कृष्ट कार्यशैली के सहारे विश्वनाथ विश्वकर्मा को कई सम्मान भी प्राप्त हुए थे। लेखक व पत्रकार अशोक कुमार अंज ने उनके जीवन पर डॉक्यूमेंट्री फिल्म 'पटरी पर पाठशाला' दूरदर्शन पटना के सहयोग से बनाई जो काफी लोकप्रिय हुई। वहीं लेखक द्वारा लिखित स्क्रिप्ट पर ईटीवी बिहार ने भी लघु डॉक्यूमेंट्री बनाई। ईटीवी बिहार ने महामना विश्वनाथ विश्वकर्मा को 'बिहारी हो तो ऐसा' का सम्मान देकर सम्मानित किया। उनके जाने से शिक्षा जगत में अपूरणीय क्षति हुई है। उनकी शिक्षा की अलख को कभी भुलाया नहीं जा सकता। 'विश्वकर्मा किरण' पत्रिका परिवार की तरफ से उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि।

सरकारी सम्मानों से अब तक वंचित विश्व के महानतम जादूगर

ओ0पी0 शर्मा

कमलेश प्रताप विश्वकर्मा

जादू एक कला है और इस कला के माध्यम से समाज में व्याप्त कुरीतियां जैसे अंधविश्वास, दहेज, नशा आदि का नाश करना ही जादूगर ओ0पी0 शर्मा का मुख्य उद्देश्य है। अब तक 38 हजार से ज्यादा शो कर चुके विश्व के महानतम जादूगर ओ0पी0 शर्मा को केन्द्र सरकार व उत्तर प्रदेश सरकार से अब तक एक भी सम्मान न मिलना यह साबित करता है कि सरकारें कला का नहीं बल्कि अपने चहेते लोगों को सम्मान देती हैं।

उत्तर प्रदेश के बागी बलिया की धरती पर विश्वकर्मा परिवार में पैदा हुये ओ0पी0 शर्मा ने प्रदेश की औद्योगिक नगरी कानपुर को अपनी कर्मभूमि बनाया। यहां की स्माल गन फैक्ट्री में काम करने के साथ ही जादू कला की तरफ अपना ध्यान केन्द्रित किया। नतीजतन आज वह विश्व के महानतम जादूगर हैं। उत्तर प्रदेश में जब-जब समाजवादी पार्टी की सरकार रही है तब-तब प्रदेश का सर्वोच्च सम्मान 'यश भारती' अनगिनत लोगों को दिया गया। यहां तक कि क्षेत्रीय स्तर पर सीमित विभिन्न विधाओं के लोगों जैसे गायक, पहलवान आदि को 'यश भारती' से नवाजा गया। विडम्बना रही कि प्रदेश और देश ही नहीं, विश्व स्तर पर ख्याति प्राप्त करने वाले महानतम जादूगर ओ0पी0 शर्मा की कला का सम्मान सपा सरकार नहीं कर सकी। प्रदेश से लेकर केन्द्र तक सरकारें बदलती रहीं, विभिन्न विधाओं के लोगों को सम्मान मिलता रहा है परन्तु ओ0पी0 शर्मा की इस जादू कला का सम्मान कोई भी सरकार नहीं कर सकी।

31 मई को रवीन्द्रालय, चारबाग में जादू शो का उद्घाटन करते हुये विधानसभा अध्यक्ष हृदय नारायण दीक्षित व महापौर संयुक्ता भाटिया

इस पत्रिका के प्रकाशित होने तक ओ0पी0 शर्मा का जादू शो लखनऊ के चारबाग स्थित रवीन्द्रालय में चल रहा है। वह और उनके बड़े पुत्र जिन्हें जूनियर ओ0पी0 शर्मा के नाम से जाना जाता है, दर्शकों का मनोरंजन करने के साथ ही जादू के माध्यम से अंधविश्वास, दहेज व नशा उन्मूलन का बेहतर संदेश दे रहे हैं। बीते 31 मई को जादू शो का उद्घाटन विधानसभा अध्यक्ष हृदय नारायण दीक्षित ने किया। इस अवसर पर लखनऊ की महापौर संयुक्ता भाटिया भी उपस्थित रहीं। अलग-अलग दिनों में अन्य मन्त्रीगण, अधिकारीगण, नेतागण जादू शो में उपस्थित होकर मंच व दर्शक दीर्घा की शोभा बढ़ाते रहे हैं परन्तु ओ0पी0 शर्मा को इस कला के लिये सम्मान मिलना चाहिये, शायद ही किसी ने जिक्र किया हो। मन्त्रियों और अधिकारियों को तो सीधे प्रधानमन्त्री व यू0पी0 के मुख्यमन्त्री को संस्तुति पत्र भेजकर सम्मान दिलाना चाहिये। पर शायद लोग इसे सिर्फ मनोरंजन का साधन मानकर अपने कर्तव्यों से विमुख हो रहे हैं जो बिल्कुल उचित नहीं।

जूनियर ओ0पी0 शर्मा अपनी कला के माध्यम से अंधविश्वास पर करारा प्रहार करते हैं। वह एक संत द्वारा अपने आसन से एक फीट ऊपर उठने को चुनौती देते हुये साढ़े तीन फीट ऊपर उठकर दर्शकों से अंधविश्वास से बचने की अपील करते हैं। जो लोग नशा करते हैं उनकी दुर्गति, दहेज लोभियों का हश्र आदि को बखूबी दिखाकर लोगों को जागरूक करते हैं। इन सबके साथ लड़की गायब करना, स्टेच्यू गायब करना, डायनासोर दिखाना आदि अद्भुत कला का हिस्सा है। इसी शो के दौरान प्रदेश सरकार के एक मन्त्री द्वारा जादूगर को प्रदान किया गया प्रशंसा पत्र मंच पर पहुंचते ही मन्त्री के इस्तीफे के रूप में परिवर्तित हो गया। ऐसी कला को उपयुक्त सम्मान मिलने का पूरा हक है।

जादूगर ओ0पी0 शर्मा का जादू शो सिर्फ भारत मे ही नहीं, विदेशों में भी विख्यात है। कई देशों में इनके शो हो चुके हैं। जानकारी के मुताबिक दो दर्जन ट्रक से ज्यादा इनके पास सामान है और सैकड़ों की संख्या में पूरा स्टाफ है। इनका शो लगातार किसी न किसी शहर में चलता ही रहता है।

जांगिड़ बालिका छात्रावास का ऐतिहासिक शिलान्यास कार्यक्रम सम्पन्न

सीकर। श्री विश्वकर्मा शिक्षा समिति के तत्वावधान में 61 कमरों वाले आधुनिक सुख–सुविधाओं से युक्त प्रस्तावित बालिका छात्रावास का भव्य एवं ऐतिहासिक शिलान्यास समारोह सीकर में सम्पन्न हुआ। शिलान्यास समारोह में देश–विदेश के करीब 3500 से अधिक बंधुओं ने भाग लिया।

आईएएस अधिकारी जोगाराम जांगिड़ के मुख्य आतिथ्य एवं अखिल भारतीय जांगिड़ ब्राह्मण महासभा के प्रदेश अध्यक्ष लखन शर्मा की अध्यक्षता में आयोजित इस समारोह में भामाशाह नेमीचंद शर्मा (गांधीधाम), देवेन्द्र कुमार शर्मा (आरएएस), श्रीमती देवयानी (आरएएस), पवन सुथार (आरएएस), देवाराम सुथार (आरएएस), ओंकार राजोतिया (आरएसीएस), राजेश जांगिड़ (प्रदेश अध्यक्ष, तेलंगाना), मक्खनलाल जांगिड़ (डीटीओ), हरीश जांगिड (बाड़मेर), भोमजी जांगिड़ (अध्यक्ष, विश्वकर्मा मंदिर चेन्नई), राजेन्द्र जांगिड (अध्यक्ष, उदयपुर जांगिड़ विकास संस्था), ताऊ शेखावाटी (प्रसिद्ध हास्य कवि), राजस्थानी फिल्म अभिनेता राज जांगिड़, मूलचंद जांगिड़ (फरीदाबाद), आर0सी0 शर्मा 'गोपाल', बी0सी0 शर्मा (पूर्व वरिष्ठ उपप्रधान), श्याम सुथार (चेन्नई), महावीर जांगिड (अहमदाबाद), हरिशंकर जांगिड़ (जयपुर), भंवरलाल जांगिड पाली, अनिल एस0 जांगिड़ गुड़गांव, संतोष जांगिड़ (प्रदेश महिला प्रकोष्ठ प्रमुख), निमेष सुथार बीकानेर, कुणाल जांगिड़ तथा प्रदेश सभा के पदाधिकारी, जिला सभाओं एवं शाखा

सभाओं के वर्तमान एवं पूर्व अध्यक्षगण, विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के पदाधिकारीगण सहित देश विदेश से सैकड़ों विशिष्ट अतिथि भी मौजूद रहे।

यह एक ऐतिहासिक समारोह था जो शिक्षा के लिये देश का समाज में अब तक का सबसे बड़ा समारोह बना और मात्र एक घंटे में भामाशाहों ने 2 करोड़ रुपए की सहयोग राशि की घोषणा कर दी। इसके लिये आयोजकगणों ने सभी भामाशाहों का आभार प्रकट किया। इस कार्यक्रम में शेखावाटी अंचल के सभी विचारधाराओं के सदस्य एक साथ एक पंडाल में एक उद्देश्य के लिये एक साथ नजर आये।

यह कार्यक्रम इसलिये भी विशेष रहा कि इसमें अहमदाबाद के युवाओं की एक टीम 'विश्वकर्मा युवा मित्रमंडल' के रूप में सक्रिय रूप से भागीदार बनी। विश्वकर्मा युवा मित्रमंडल के सभी सदस्य इसके लिये बधाई एवं धन्यवाद के पात्र हैं। कुछ माह पहले सूरजमल सेवदड़ा एवं श्री विश्वकर्मा शिक्षा समिति के अध्यक्ष चिरंजीलाल के नेतृत्व में एक टीम दिनेश जांगिड़ 'सारंग' से मिलने अहमदाबाद गई थी और लोगों ने उनसे इस पुनीत कार्य में भागीदार बनने का आग्रह किया था। तब से इस कार्य के संपन्न होने तक पूरी टीम सीकर और टीम मित्रमंडल के सहयोग से यह कार्य सफलता के साथ पूर्ण हुआ।

दिनेश जांगिड़ 'सारंग' ने इसके लिये सूरजमल सेवदड़ा, चिरंजीलाल, रामप्रसाद, ओमप्रकाश, नवरंगलाल, कृष्ण कुमार, महेन्द्र, कजोड़मल, नंदलाल, चौथमल, नरेन्द्र, जयदत्त, कुलदीप सहित सभी सैंकड़ो

कार्यकर्ताओं का आभार प्रकट किया जिन्होंने दिन–रात एक करके मेहनत की और कार्यक्रम को सफल बनाया। समारोह में उपस्थित रहे सभी अतिथियों व आगन्तुकों के प्रति भी आभार प्रकट किया। प्रदेश अध्यक्ष लखन शर्मा ने बताया कि इस कार्यक्रम से समाज में शिक्षा के लिये एक सकारात्मक ऊर्जा का संचार हुआ है। कहा कि, उम्मीद करता हूं कि बिना किसी व्यवधान के यह ऊर्जामय ज्योति ऐसे ही जलती रहेगी। उन्होंने शिलान्यास समारोह की भव्यता और सफलता के लिये दिनेश जांगिड़ 'सारंग' (वरिष्ठ आई आर एस अधिकारी) के प्रति आभार प्रकट किया।

विश्वकर्मा पूजा अवकाश बहाली के लिए मुख्यमंत्री को एक लाख पोस्टकार्ड भेजेगा विश्वकर्मा समाज- अशोक विश्वकर्मा

चन्दौली। ऑल इंडिया यूनाइटेड विश्वकर्मा शिल्पकार महासभा की दुलहीपुर स्थित केंद्रीय कार्यालय में पदाधिकारियों की संपन्न बैठक में प्रदेश भर में विश्कर्मा समाज के निर्दोष लोगों की हत्या, अपहरण, बलात्कार एवं जुल्म, अत्याचार, अन्याय और उत्पीड़न की घटित अनेकों घटनाओं पर गहरी चिंता व्यक्त करते हुए आगामी आंदोलन एवं कार्यक्रमों की रणनीति तय की गयी। बैठक को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष अशोक कुमार विश्वकर्मा ने कहा कि मौजूदा सरकार में विश्वकर्मा समाज के लोग सर्वाधिक जुल्म अन्याय भेदभाव और अपमान के शिकार हैं। पुलिस फरियादियों के साथ अपराधियों जैसा व्यवहार कर रही है। पीड़ितों की सुनने वाला कोई नहीं है, प्रशासनिक मशीनरी पूरी तरह से निरंकुश और भ्रष्ट हो चुकी है। ऐसा लगता है इन पर सरकार का कोई नियंत्रण नहीं रह गया है जिससे सरकार के प्रति गरीब मजदूर एवं कमजोर वर्ग के लोगों सहित आमजन में निराशा है।

उन्होंने कहा वहीं दूसरी ओर विश्वकर्मा पूजा पर्व का अवकाश सरकार द्वारा निरस्त किए जाने से करोड़ों विश्वकर्मा वंशियों के धार्मिक आस्था एवं स्वाभिमान पर कुठाराघात हुआ है जिससे विश्वकर्मा समाज आक्रोशित एवं लंबे समय से आंदोलित है। उन्होंने

कहा देव शिल्पी भगवान विश्वकर्मा हमारे सामाजिक, स्वाभिमान और गौरव के प्रतीक हैं। स्कंद पुराण के अनुसार प्रत्येक वर्ष 17 सितंबर को पड़ने वाले कन्या संक्रांति दिवस को भगवान विश्वकर्मा ने सम्पूर्ण पृथ्वी की रचना की इसलिए इस दिन को पृथ्वी दिवस के रूप में भी मनाया जाता है। अलौकिक एवं सुंदर पृथ्वी की रचना करने के कारण देवताओं ने भगवान विश्वकर्मा की स्तुति की इसलिए पौराणिक काल से ही इस इस दिन को भगवान विश्वकर्मा के पूजा पर्व के रूप में समस्त मानव प्राणी बिना किसी धार्मिक एवं जातीय भेदभाव के धूमधाम के साथ उल्लास पूर्वक मनाते हैं।

उन्होंने बताया कि विगत सरकारों में विश्वकर्मा पूजा पर्व का सार्वजनिक अवकाश घोषित था किंतु योगी जी की सरकार पदारूढ़ होते ही इस अवकाश को निरस्त कर दिया गया तथा भगवान विश्वकर्मा को महापुरुष तथा श्रमिकों का देवता कह कर अपमानित किया गया जिससे विश्वकर्मा समाज के लोगों की भावना आहत हुई और उनमें गहरा आक्रोश व्याप्त है। उन्होंने कहा कि विश्वकर्मा समाज के सभी अनुषांगिक इकाइयों लोहार, बढ़ई, ताम्रकार, मूर्तिकार एवं स्वर्णकार भाई एक साथ संगठित होकर विगत वर्षों से अपनी इस मांग को लेकर आंदोलनरत हैं, लेकिन सरकार लगातार इन मांगों की उपेक्षा और अनदेखी कर रही है। इसलिए संगठन ने यह निर्णय किया है कि प्रदेश में बढ़ते हुए अपराध के खिलाफ तथा विश्वकर्मा पूजा पर्व के सार्वजनिक अवकाश की मांग को लेकर 1 जुलाई से 10 जुलाई तक निरंतर प्रदेशभर से एक लाख पोस्टकार्ड मुख्यमंत्री को भेज कर 'विश्वकर्मा पूजा का सार्वजनिक

योग दिवस पर डा0 पूनम शर्मा सम्मानित

लखनऊ। पंचम अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर डा0 पूनम शर्मा को जिलाधिकारी लखनऊ कौशलराज शर्मा ने सम्मानित किया। डा0 पूनम शर्मा को यह सम्मान योग दिवस पर कुशल योग संचालन के लिये प्रदान किया गया।

प्राकृतिक चिकित्सक एवं योग विशेषज्ञ डा0 पूनम शर्मा को डा0 राम मनोहर लोहिया पार्क गोमतीनगर में योग कराने की जिम्मेदारी दी गई थी। यहां पर मुख्य अतिथि के रूप में अपर जिलाधिकारी ट्रान्स गोमती के साथ ही काफी संख्या में प्रशासनिक अधिकारीगण व आयुष विधा के चिकित्सक उपस्थित रहे।

क्षेत्रीय आयुर्वेदिक एवं यूनानी अधिकारी द्वारा डा0 पूनम शर्मा को विशेष जिम्मेदारी सौंपी गई थी। इसके साथ ही पंचम अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में सरकारी कार्यक्रम योग पखवाड़ा के अन्तर्गत बेगम हजरत महल पार्क में करीब 400 लोगों को योग दिवस प्रोटोकॉल के अनुसार योग कराया। लोगों को रोग निवारण योगासन, प्राणायाम एवं ध्यान बताया गया।

.....पिछले पृष्ठ का शेष

अवकाश बहाल करो' अभियान चलाया जायेगा। इसके बाद विभिन्न चरणों में प्रदेश व्यापी व्यापक आंदोलन किया जाएगा।

बैठक की अध्यक्षता नंदलाल विश्वकर्मा एवं संचालन श्रीकांत विश्वकर्मा ने किया। बैठक में मुख्य रूप से उपस्थित लोगों में सर्वश्री डॉ0 प्रमोद कुमार विश्वकर्मा, राम किशुन विश्वकर्मा, रमेश विश्वकर्मा, भैरव प्रसाद विश्वकर्मा, भरत विश्वकर्मा, सुरेश विश्वकर्मा, चौधरी विश्वकर्मा, अर्जुन विश्वकर्मा, महेंद्र विश्वकर्मा, श्याम लाल विश्वकर्मा, राजकुमार विश्वकर्मा, मनोज विश्वकर्मा, किशन विश्वकर्मा, राहुल विश्वकर्मा, लक्ष्मण विश्वकर्मा, सहित सैकड़ो लोग थे।

लक्ष्मी सुथार का चयन डीएसपी नियुक्त

राजस्थान पुलिस सेवा में सुथार समाज की बेटी लक्ष्मी सुथार का चयन डीएसपी पद पर हुआ है। उनकी नियुक्ति पर सामाजिक संगठनों ने बधाई प्रेषित किया है।

आईपीएस बनने के लिये छोड़ी एक लाख रुपए महीने की जॉब

जबलपुर। अधार ताल निवासी 23 वर्षीय अभिनय विश्वकर्मा ने पहले ही अटेम्प्ट में यूपीएससी सिविल सर्विसेज में 196वीं रैंक हासिल की है। अभिनय का कहना है कि आईपीएस बनने का सपना पूरा करने के लिए 1 लाख रुपए महीने की जॉब छोड़कर पूरी मेहनत के साथ तैयारी की। उनका कहना है कि इस दौरान सिर्फ फैमिली मेम्बर्स से बात करते थे और सोशल मीडिया से भी दूरी बनाई रखी।

लाखों युवाओं में से कुछ ही कर पाते हैं–

अभिनय ने बताया कि सवाल पूछा गया था कि जिस वक्त पुलवामा अटैक हुआ, अगर आप वहां पदस्थ होते तो, प्रशासनिक अधिकारी के रूप में क्या कदम उठाते? मॉर्डन फिलॉसफी से आप क्या समझते हैं? ये सवाल किसी क्विज के नहीं हैं, बल्कि देश की सबसे कठिन परीक्षाओं में से एक यूपीएससी सिविल सर्विसेज साक्षात्कार के हैं, जिनके जवाब देकर शहर के अभिनय विश्वकर्मा ने यह कर दिखाया जो लाखों में से कुछ ही कर पाते हैं। उन्होंने यह एग्जाम 196वीं रैंक हासिल कर क्वालिफाई कर लिया है। 23 साल के अभिनय न्यू राम नगर अधारताल निवासी हैं। उन्होंने दिल्ली में रहकर प्रिपरेशन की और रोज 15 से 18 घण्टे पढ़ाई को दिए। दिलचस्प बात यह है कि मिडिल क्लास फैमिली से आने वाले अभिनय ने आईपीएस बनने के सपने को पूरा करने के लिए 1 लाख रुपये महीने की नौकरी छोड़ दी थी।

अच्छे गाइडेंस और अनुभव की जरूरत–

हमारे बीच एक धारणा बनी है दिल्ली जाकर तैयारी करने या आईआईटी के क्रेक करने के बाद ही एग्जाम क्वालीफाई किया जा सकता है, जबकि ऐसा नहीं है। इन सबसे ज्यादा जरूरी यह बात है कि आप कितने डेडिकेटेड हैं। जब आप अपना 100 प्रतिशत देंगे तो सफलता मिलेगी। हां, अच्छा गाइडेंस और अच्छे पियर ग्रुप में रहकर भी सफल हुआ जा सकता है। मैंने सोशल मीडिया से दूरी बनाकर रखी, सही मायनों में खुद को हर तरह से आईसोलेटेड रखा। मैं सिर्फ अपने पैरेंट्स और भाइयों से ही बात करता था। जो मुझे हमेशा मोटीवेट करते थे।

आईआईटीयन हैं अभिनय–

अभिनय ने शहर के सेंट अलॉयसियस स्कूल और केन्द्रीय विद्यालय वीएफजे से पढ़ाई की है। इसके बाद उन्होंने आईआईटी जेईई एग्जाम क्वालीफाई किया और आईआईटी बीएचयू से मैकेनिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई की। इंजीनियिरिंग के बाद एक ऑटोमोबाइल कंपनी में 1 लाख रुपए महीने की जॉब उन्हें मिली। 1 साल तक जॉब करने के बाद उन्होंने जॉब छोड़ दी।

क्यों छोड़ी जॉब–

इस सवाल के जवाब में अभिनय कहते हैं कि जब मैं कॉलेज की पढ़ाई कर रहा था, उस वक्त से मुझे समाज में घटने वाली घटनाएं विचलित करतीं थीं। ऐसा लगता था कि पुलिस एफर्ट तो कर रही पर कुछ हो नहीं पा रहा। क्राइम इन्वेस्टिगेशन में रुचि थी, इसलिए मैंने पहला प्रेफरेंस आईपीएस को दिया, इसके बाद आईएएस और फिर आईएफएस। मुझे पूरी उम्मीद है कि अब मेरा सपना पूरा हो ही जाएगा।

अधूरा सपना पूरा हुआ–

अभिनय के पिता मोती विश्वकर्मा पटवारी हैं, वहीं माँ कल्पना कोसमघाट में एचएम हैं। घर में उनके अलावा दो भाई और हैं। बड़े भाई अभिषेक पुणे में जॉब करते हुए यूपीएससी की तैयारी कर रहे हैं, वहीं छोटे भाई विनायक इंजी0 की पढ़ाई कर रहे हैं। उनकी माँ कहती हैं कि बेटे ने मेरा अधूरा सपना पूरा किया है। वहीं पिता कहते हैं कि जब जॉब छोड़ने की बात आई तो टेंशन हुआ, लेकिन बेटे ने एक मौका माँगा, हम सबने सपोर्ट किया।

अभिनय की सफलता पर ढेर सारे लोगों ने बधाई दिया है।

डा0 राजेश विश्वकर्मा ने जन्म से मूक बधिर सवा दो हजार बच्चों को दी आवाज

''कोकिलयर इम्पलांट ऑफ ग्रुप इंडिया की ओर से हर संभव यही प्रयास किया जा रहा है कि कोई बच्चा बहरा होने के कारण मूक बधिर न रहे।''

डॉ0 राजेश विश्वकर्मा

एचओडी, ईएनटी सिविल अस्पताल एवं कोकिलियर इम्पलांट ग्रुप ऑफ इंडिया के अध्यक्ष

अहमदाबाद। जन्म से बहरा होना मतलब पूरा जीवन इशारों की भाषा पर रहना। लेकिन अहमदाबाद के सिविल अस्पताल के ईएनटी (कान, नाक एवं गला) विभाग के सर्जन ने ऐसे ही एक दो नहीं बल्कि सवा दो हजार बच्चों को आवाज दिलाई है। दरअसल ऐसे बच्चों का ऑपरेशन कर कृत्रिम कान लगाए हैं। जिनके माध्यम से न सिर्फ ये बच्चे बोलने लगे हैं बल्कि इनमें से कई तो संगीतकार और इन्जीनियरिंग की पढ़ाई भी कर रहे हैं। इस ऑपरेशन को चिकित्सकीय भाषा में कोकिलियर इम्पलांट कहा जाता है।

अहमदाबाद के सिविल अस्पताल में कोकिलियर इम्पलांट की शुरूआत के बाद से अब तक डेढ़ हजार बच्चों के कृत्रिम कान लगाए हैं। इनमें से लगभग आधे ऑपरेशन राज्य सरकार की ओर से निःशुल्क किए गए हैं। वैसे देखा जाए तो एक इम्पलांट की कीमत साढ़े पांच से छह लाख रुपए तक होती है लेकिन राज्य सरकार की ओर से स्कूल हेल्थ प्रोग्राम के अन्तर्गत निःशुल्क है। सिविल अस्पताल ईएनटी विभाग में इस तरह की सर्जरी किसी सरकारी अस्पताल में सबसे पहले शुरू हुई थी। इतना ही नहीं सिविल अस्पताल के ईएनटी विभागाध्यक्ष डॉ0 राजेश विश्वकर्मा ने राज्य के अन्य शहर सूरत, राजकोट, वड़ोदरा, गांधीनगर आदि में भी कोकिलियर इम्पलांट की सर्जरी सिखाई थी। राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र समेत कई राज्यों के 32 शहरों में इम्पलांट की सर्जरी सिखाई है। संभवतः देश में सबसे अधिक इम्पलांट करने वाले डॉ0 विश्वकर्मा ने अब तक 2250 बच्चों को आवाज देने में मुख्य भूमिका निभाई है।

क्या है कोकिलियर इम्पलांट–

जन्म से बहरे बच्चों को सुनने के लिए आर्टिफिसियल (कृत्रिम कान) लगाया जाता है। इस यंत्र से बच्चे सुनने लगते हैं। कान के पीछे की हड्डी में इस यंत्र को लगाया जाता है। कान के लेबल पर जब आवाज पहुंचती है तो यह यंत्र वायरलेस से आवाज को कान की मुख्य नस और उसके बाद दिमाग तक पहुंचाता है। इसके बाद वह सुनने लग जाता है।

जन्म के तीन वर्ष तक अच्छे परिणाम–

कोकिलियर इम्पलांट के सबसे बेहतर परिणाम जन्म से लेकर तीन वर्ष तक की आयु के होते हैं। अधिक आयु में बोलने के लिए स्पीच थेरेपी की ज्यादा जरूरत होती है। क्योंकि बच्चे परिजनों को सुन कर ही बोलना सीखते हैं।

इस जमाने में कोई रह न जाए मूकबधिर–

डेढ़ दशक पहले तक यह यदि बच्चा जन्म से मूकबधिर है तो उसके बारे में यही सोचा जाता था कि वे जीवन भर तक इशारों से ही समझ सकेगा। लेकिन कोकिलियर इम्पलांट की तकनीक से अब ऐसा नहीं है। ऐसे बच्चे को इम्पलांट के माध्यम से समाज की मुख्य धारा में जोड़ा जा सकता है।

इन्जीनियर और संगीतकार भी हो गए हैं अब–

सिविल अस्पताल में मूकबधिर बच्चों का इम्पलांट करने के बाद कई तो इन्जीनियरिंग की पढ़ाई कर रहे हैं तो कई संगीतकार भी हो गए हैं। यदि ये बच्चे इम्पलांट नहीं करवाते तो न तो वे अच्छी तरह से पढ़ाई कर सकते थे और न ही संगीतकार बन सकते थे।

विश्वकर्मा स्वाभिमान सम्मेलन में महापुरुषों की उपेक्षा का आरोप

मनाया गया
राम जियावनदास बावला
का जन्म दिवस

चन्दौली। आल इण्डिया यूनाइटेड विश्वकर्मा शिल्पकार महासभा ने सरकार पर महापुरुषों की उपेक्षा का आरोप लगाया है। महासभा के तत्वावधान में जनपद चंदौली के अरविन्द लान में भोजपुरी भाषा साहित्य के आधुनिक तुलसी कवि एवं गीतकार स्वर्गीय राम जियावनदास बावला के जन्म दिवस के अवसर पर आयोजित स्मरणाजंली स्वाभिमान अधिकार सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष अशोक कुमार विश्वकर्मा ने कहा साहित्य, संस्कृति, शिक्षा, कला, शिल्प सहित विभिन्न क्षेत्रों में अपने पुरुषार्थ के बल पर देश व दुनिया में विशिष्ट एवं उल्लेखनीय योगदान करने वाले विश्वकर्मा समाज के महापुरुष घोर उपेक्षा और भेदभाव के शिकार हैं। जिसके चलते उनका आदर्श कृतित्व और विरासत जनसाधारण के बीच से विस्मृत एवं समाप्त हो रहा है, इसलिए महासभा ने अपने महापुरुषों के स्मृतियों को जीवंत रखने का फैसला किया है। इसी क्रम में भोजपुरी भाषा काव्य को नई विधा देने वाले चकिया के भीषमपुर गांव में 1 जून 1922 को साधारण लोहार परिवार में जन्म लेने वाले उपेक्षित और गुमनाम साहित्यकार लोक कवि रामजियावन दास बावला के 97वीं जयंती पर उनके आदर्श, कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर चर्चा करते हुए कहा कि वह विलक्षण प्रतिभा के धनी थे।

उन्होंने गोस्वामी तुलसीदास के पाद पीठिका को आत्मसात किया और उनसे प्रेरित होकर राम चरित्र के बारे में देसी भोजपुरी भाषा में उद्भावनाएं रची तथा कविता, सवैया, परम्परा को भोजपुरी आयाम दिया। इस प्रकार वह लोक शास्त्र और साहित्य शास्त्र के बीच सेतु का काम किया है। उन्होंने बताया कि भैंस चराते समय वन मार्ग में उन्हें वनवासी राम का साक्षात्कार हुआ जिससे भाव विगलित हो अनायास उनके मुख से बोल फूट पड़े 'बबुआ बोलता ना के हो देहलेस तोहके बनवास' फिर एक समय अपने आप यह गीत पूरा हुआ। उनकी यह पहली रचना 1957/58 में आकाशवाणी से प्रसारित हुई जो काफी लोकप्रिय हुई और सराही गई। अपनी इस रचना से बावला जी अमर हो गए।

उन्होंने कहा कि बावला जी निस्पृह फक्कड़ कवि थे। उनका यह देव दुर्लभ गुण उनकी कवि चेतना से जुड़कर अपने आप में रचनाकारों के लिए भी स्पृहणीय है। बावला जी विश्वकर्मा समाज के गौरव और स्वाभिमान के प्रतीक हैं। उनकी विरासत और स्मृतियां हमारी शान और पहचान है जिसे जीवंत रखने के लिए हम संकल्पबद्ध हैं।

सम्मेलन में अन्य वक्ताओं ने सामाजिक एकजुटता पर बल देते हुए कहा नवगठित सरकार से शोषित, वंचित और उपेक्षित समाज के लोगों को बहुत सारी उम्मीदें हैं। सरकार ने हर वर्ग के लिए विकास, समता, ममता और विश्वास का वायदा किया है। सरकार अपने वायदे पर खरा नहीं उतरती तो विश्कर्मा समाज के लोग अपने अधिकारों तथा लम्बित मांगों को लेकर आंदोलन की राह पर चलने को मजबूर होंगे।

इस अवसर पर बावला जी के गीतों का संग्रह 'गीतलोक' पुस्तक का लोकार्पण हुआ तथा समकालीन भोजपुरी साहित्य के कई रचनाकारों ने अपनी रचनाओं को प्रस्तुत करते हुए सामाजिक विसंगतियों, असमानता,

भेदभाव और भ्रष्टाचार पर करारा प्रहार किया। मूर्धन्य रचनाकारों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। सम्मेलन में सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित कर भारत सरकार से बावला जी को मरणोपरांत 'पद्मश्री' सम्मान देने की मांग की गई तथा चकिया भीषमपुर मार्ग का नामकरण बावला जी के नाम पर करने सहित स्मृति प्रवेश द्वार एवं पुस्तकालय का निर्माण कराने की मांग नगर पालिका परिषद चकिया तथा शासन से की गई। कार्यक्रम के आरम्भ में भगवान विश्वकर्मा एवं बावला जी के चित्र पर माल्यार्पण कर दीप प्रज्वलित किया गया। स्वागत गीत पंचम विश्वकर्मा और उनके साथियों ने प्रस्तुत किया।

भोजपुरी काव्य रचनाकारों में प्रमुख रूप से सर्वश्री हरबंस सिंह बवाल, राजेश विश्वकर्मा राजू, बंधु पाल बंधु, राजेंद्र प्रसाद सिंह मौर्य भ्रमर, अलियार प्रधान ओम प्रकाश शर्मा, राजेंद्र प्रसाद गुप्त बावरा मुख्य रूप से थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता विजय बहादुर विश्वकर्मा (सेवानिवृत्त कैप्टन) एवं संचालन श्रीकांत विश्वकर्मा ने किया। विशिष्ट अतिथि श्रीमती रेखा शर्मा अध्यक्ष नगर पालिका परिषद रामनगर एवं डॉ0 राजेश कुमार शर्मा थे।

इस अवसर पर विचार व्यक्त करने वाले लोगों में प्रमुख रूप से सर्वश्री डॉ0 प्रमोद कुमार विश्वकर्मा, डॉ0 धर्मेंद्र कुमार विश्वकर्मा, रामकिशुन विश्वकर्मा, राजकिशोर विश्वकर्मा, रमेश कुमार विश्वकर्मा, विनय विश्वकर्मा, चंद्रमा प्रसाद विश्वकर्मा, अनिल कुमार विश्वकर्मा, श्रीमती अनीता विश्वकर्मा, श्रीमती मालती देवी विश्वकर्मा, श्रीमती रेखा शर्मा, श्रीमती सोम लता विश्वकर्मा, श्याम बिहारी विश्वकर्मा, सुभाष विश्वकर्मा, विजय विश्वकर्मा पत्रकार, विष्णु विश्वकर्मा, श्याम लाल विश्वकर्मा, सुरेंद्र विश्वकर्मा, धीरेंद्र पंचाल, शंभू विश्वकर्मा, सुरेश विश्वकर्मा, महेंद्र विश्वकर्मा, रवि शंकर विश्वकर्मा, अशोक विश्वकर्मा, बसंत विश्वकर्मा, जवाहर विश्वकर्मा, उमाशंकर विश्वकर्मा, नीरज विश्वकर्मा, दीनदयाल विश्वकर्मा, दिनेश विश्वकर्मा, परमेश्वर विश्वकर्मा, अवधेश विश्वकर्मा, प्रेम विश्वकर्मा, कालिका विश्वकर्मा, नीतीश विश्वकर्मा, राहुल विश्वकर्मा, रोहित विश्वकर्मा, धर्मेंद्र विश्वकर्मा, नारायण विश्वकर्मा, नंदकुमार विश्वकर्मा, प्रदीप मास्टर, चंद्रशेखर विश्वकर्मा, चौधरी विश्वकर्मा, दीपक विश्वकर्मा, राजेश विश्वकर्मा, अर्जुन विश्वकर्मा, अजय विश्वकर्मा, विनय विश्वकर्मा, मोहित विश्वकर्मा, गोविंद विश्वकर्मा, भरत विश्वकर्मा, अजीत विश्वकर्मा, मोनू विश्वकर्मा, अनिल विश्वकर्मा, चंद्रमा विश्वकर्मा, सुरेश विश्वकर्मा, रोशन विश्वकर्मा, पिंटू विश्वकर्मा सहित बड़ी संख्या में समाजजन व साहित्यप्रेमी उपस्थित थे।

भैंस चराते समय वन मार्ग में उन्हें वनवासी राम का साक्षात्कार हुआ जिससे भाव विगलित हो अनायास उनके मुख से बोल फूट पड़े 'बबुआ बोलता ना के हो देहलेस तोहके बनवास' फिर एक समय अपने आप यह गीत पूरा हुआ। उनकी यह पहली रचना 1957/58 में आकाशवाणी से प्रसारित हुई जो काफी लोकप्रिय हुई और सराही गई।

मिस इण्डिया यूके डियाना उप्पल ने बनाई भारतीय घुमंतू समुदाय गद्दी लोहार पर डॉक्यूमेन्ट्री

जयपुर। मिस इण्डिया यूके रह चुकीं डियाना उप्पल फिल्म निर्देशन की दुनिया में कदम रखने जा रही हैं। वह गद्दी लोहार समुदाय के जीवन पर एक डॉक्यूमेन्ट्री बनाने जा रही हैं, डियाना एक ब्रिटिश भारतीय हैं। डियाना के अनुसार उन्होंने गद्दी लोहार समुदाय के साथ 1 साल का समय बिताया और वो एक बेहद ही दिलचस्प लोग जिनकी आवाज लोगों तक पहुंचाने की जरूरत है।

डियाना ने ये भी बताया कि जब उन्होंने गद्दी लोहार सुमदाय पर शोध करने के बाद उनसे मिली तो उनकी जीवनशैली को देखकर हैरान रह गई। वो लोग बिना कोई मंजिल के यात्रा करते हैं। वो पूरी तरह से दुनिया की आधुनिकता से कटे हुए हैं। हम घुमंतू समुदाय के लोगों को भुला देते हैं लेकिन वो अपनी परम्परा आज भी बनाए हुए हैं। अभिनेत्री ने कहा कि उनका मकसद फिल्म में तथ्य और वास्तविकता को दिखाने का है जिससे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जागरूकता फैले। उन्होंने ये भी कहा, 'मैं बहुत ही दिलचस्प लोगों के बीच आई हूं जिससे उनके जीवन की गहराई तक पहुंच सकूं। उनका जीवन जीने का सरल तरीका हम सबको एक सबक सिखा सकता है।'

डियाना के मुताबिक वो गद्दी लोहार समुदाय के वास्तविक जीवन पर फिल्म बना कर गद्दी लोहारों के समर्थन लिए लोगों और एनजीओ को आकर्षित करेंगी। डियाना ने बताया कि एक निर्देशक के तौर पर इस फिल्म को शूट करना बेहद मुश्किल रहा, क्योंकि गद्दी लोहार समुदाय बाहरी लोगों के साथ घुलना-मिलना पसंद नहीं करते हैं, इसलिए मुझे उनका विश्वास जीतने में बहुत समय देना पड़ा।

मिस इण्डिया यूके रह चुकी डियाना ने बताया कि इस डॉक्यूमेन्ट्री के बनाने का उद्देश्य केवल फिल्म बनाना नहीं है। मेरा मकसद इन लोगों की मदद करना है क्योंकि एक जगह पर नहीं रहने से घुमंतू जनजातियों को आसानी से भुला दिया जाता है। डियाना ने कहा, 'मैं बहुत करीब से बंजारों के जीवन और उनके रहन-सहन को देखेंगे। इसमें हम ये भी देखना चाहेंगे कि सरकार इनके साथ किस हद तक है और किस तरह से इनकी मदद कर रही हैं। साथ ही इस डॉक्यूमेन्ट्री में हम बंजारों की संस्कृति, सभ्यता, परम्परा वेडिंग सेरेमनी जैसी चीजों को भी शामिल करेंगे।'

अपने वेतन से प्रधानाचार्य ऊषा टमटा संवार रहीं हैं बच्चों का भविष्य

रूद्रपुर। भाव में सेवा और उजाले का लक्ष्य। कुछ इस तरह बच्चों का भविष्य संवारने की दिशा में अपना जीवन समर्पित किया है जूनियर हाईस्कूल सैंजना की प्रभारी प्रधानाचार्य ऊषा टमटा ने। वह दूसरों की खुशी में अपनी खुशियां तलाशती हैं। शिक्षा का प्रकाश फैलाने के साथ ही वह वेतन का बड़ा भाग ऐसे बच्चों को आगे बढ़ाने में खर्च करती हैं, जो संसाधन के आभाव में पिछड़ जाते हैं।

शिक्षा के साथ खेल के मैदान में वरिष्ठ शिक्षिका ऊषा टमटा ने अपनी अलग पहचान कायम की है। दूरस्थ सैंजना गांव में जूनियर हाईस्कूल में अपनी सेवाएं देने वाली शिक्षिका को गांव का हर व्यक्ति सम्मान की दृष्टि से देखता है। सम्मान दे भी क्यों न, उनके द्वारा किया जाने वाला काम अपनी बात खुद बोलता है। सामाजिक व आर्थिक रूप से कमजोर बच्चों को आगे बढ़ाने की दिशा में काम करना उनकी नियति में शामिल हो चुका है। गांव की एक दिव्यांग बच्ची रुख्सीन के अंदर पढ♦ की ललक को पहचान कर उन्होंने उसकी पूरी मदद करते हुए आज मुकाम दिलाने का काम किया। आज वह कक्षा 12 की परीक्षा पास कर चुकी है। यहीं पर सेवा का काम नहीं रुक जाता है।

लाइब्रेरी से जगा रहीं शिक्षा की अलख–

ऊषा ने क्रिएटिव उत्तराखंड संस्था के साथ जुड़ कर सृजन नाम से पुस्तकालय की स्थापना भी की है। स्कूल से लौटकर वह बच्चों में शिक्षा की अलख जगाने का भी काम करती हैं। वह बच्चों में पढ़ाई की रुचि जगाती हैं। पुस्तकालय के रख रखाव का काम संस्था के लोग उनके साथ पूरी जिम्मेदारी के साथ करते हैं। साथ ही साहित्य के संरक्षण के लिए प्रेरणास्त्रोत रहे कवियों की याद को नुक्कड़ नाटक के माध्यम से ताजा करने का भी काम करते हैं। उनकी सादगी का यह आलम है कि इतना कुछ करने के बाद भी वह श्रेय लेने से बचती हैं।

सेपक टाकरा को बढ़ावा देने की ललक–

सेपक टाकरा को दिशा देने के लिए भी ऊषा टमटा का प्रयास सार्थक होता दिखा। छोटे से गांव के बच्चों को न केवल कोच की सुविधा मिली, अपितु सेपक टाकरा एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉ0 नागेन्द्र शर्मा के साथ टीम ने सैंजना के जूनियर हाई स्कूल पहुंचकर उनके इस प्रयास की खुले दिल से सराहना की। प्राथमिक शिक्षक संघ के अध्यक्ष हरीश दनाई के साथ शिक्षक वर्ग पूरी तरह से उनके साथ खड़ा रहता है।

रजि0 नं0: 2689

ॐ कंचन काया

Yoga Naturopathy & Acupressure Center

ॐ कंचनकाया चिकित्सा एवं प्रशिक्षण केन्द्र में प्राकृतिक चिकित्सा, योग चिकित्सा एवं एक्यूप्रेशर द्वारा शारीरिक एवं मानसिक व्याधियों का समाधान तथा योग प्राकृतिक चिकित्सा एवं एक्यूप्रेशर द्वारा चिकित्सा का प्रशिक्षण भी दिया जाता है।

योग अभ्यास की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुरूप अभ्यास की सुविधा :–

- ☞ व्यक्तिगत योगाभ्यास की सुविधा।
- ☞ आवास पर याोग प्रशिक्षण।
- ☞ केन्द्र पर योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा की सेवा।
- ☞ शारीरिक व्याधि जैसे मधुमेह, मोटापा, जोड़ों का दर्द, कब्ज, उच्च रक्तचाप, निम्न रक्तचाप, महिलाओं की मासिक धर्म से सम्बन्धित समस्याओं का समाधान।

मानसिक व्याधि जैसे– अवसाद, अनिद्रा, अतिनिद्रा इत्यादि।

18/357, Indira Nagar
Lucknow
Mob.- 7355206306

डा0 पूनम शर्मा, प्राकृतिक चिकित्सक एवं योग विशेषज्ञ

विश्वकर्मा समाज ने किया लोकसभा अध्यक्ष का सम्मान

दिल्ली। विश्वकर्मा समाज के लोगों ने वरिष्ठ समाजसेवी दिनेश वत्स के नेतृत्व में लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला के आवास पर पहुच कर उनका सम्मान किया। वरिष्ठ समाजसेवी रोहित शर्मा 'बाबा कानपुरी', रोहित शर्मा (सम्पादक- विश्वधर्मा टाइम्स), अनिल कुमार विश्वकर्मा (नोयडा), अनिल कौशिक आदि लोग इस अवसर पर उपस्थित रहे।

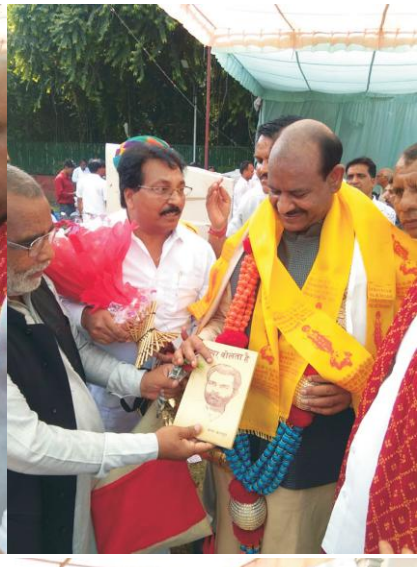

दिनेश वत्स ने बताया कि ओम बिड़ला भारतीय जनता पार्टी से सक्रिय राजनेता और राजस्थान राज्य के कोटा-बुंदी निर्वाचन क्षेत्र से 16वीं लोकसभा में संसद सदस्य हैं। वे कोटा साउथ से तीन बार राजस्थान विधान सभा के सदस्य थे। वे विभिन्न माध्यमों के द्वारा सामाजिक सेवा, राष्ट्र सेवा, गरीब, वृद्ध, विकलांग और असहाय महिलाओं की सहायता करने में रुचि रखते हैं। उन्होंने विभिन्न सामाजिक संगठनों के माध्यम से विकलांग, कैंसर रोगियों और थैलेसेमिया रोगियों की मदद की हैं। विकलांगों को मुफ्त साइकिलें, व्हीलचेयर और कान की मशीन प्रदान कराया है। बढ़ते प्रदूषण की जांच और हरियाली में कमी के लिए कोटा में लगभग एक लाख पेड़ लगाने के लिए उन्होंने एक प्रमुख 'ग्रीन कोटा वन अभियान' लॉन्च किया।

नेहरू युवा केन्द्र के माध्यम से देश के ग्रामीण क्षेत्रों में खेल और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करने की एक प्रमुख योजना तैयार करके ग्रामीण क्षेत्रों में प्रतिभाशाली युवाओं को बढ़ावा देने के लिए आंदोलन का नेतृत्व किया। उन्होंने राजस्थान के बारा जिला में सहिया आदिवासी इलाके में कुपोषण और अर्ध-बेरोजगारी को हटाने के लिए मिशन का नेतृत्व किया।

राजस्थान सरकार के संसदीय सचिव के रूप में कार्यकाल के दौरान उन्होंने गरीब, असहाय, गंभीर मरीजों को राज्य सरकार के माध्यम से 50 लाख की वित्तीय सहायता प्रदान करके उनकी सहायता की। उन्होंने बाढ़ पीड़ितों की मदद की और राहत अभियान में राहत दल का नेतृत्व किया। 15-16 अगस्त 2004 को कोटा शहर में बाढ़ पीड़ितों को आश्रय और चिकित्सा सुविधाएं प्रदान की। उन्होंने विभिन्न सामाजिक संगठनों के माध्यम से विकलांग, कैंसर रोगियों और थैलेसेमिया रोगियों की मदद, विकलांगों को मुफ्त साइकिलें, व्हीलचेयर और श्रवण सहायता प्रदान की।

पैरों से लिखी परीक्षा और फर्स्ट क्लास पास हुए तुषार

लखनऊ। ‘मंजिलें उन्हीं को मिलती हैं, जिनके सपनों में जान होती है, पंख से कुछ नहीं होता, हौसलों से उड़ान होती है...।’

अमौसी स्थित अवध विहार कॉलोनी के राजेश विश्वकर्मा के बेटे तुषार ने उपरोक्त पंक्तियों को चरितार्थ किया है। सरोजनीनगर के क्रिएटिव कॉन्वेंट स्कूल में पढ़ने वाला तुषार विश्वकर्मा दोनों हाथों से दिव्यांग हैं। जिसके कारण उसे लिखने में दिक्कत होती थी। मगर लगन के पक्के तुषार ने पढ़ाई नहीं छोड़ी। कठिन परिश्रम व अभ्यास के जरिए पैरों से हाथ का भी काम लेना शुरू कर दिया। जब इसका नतीजा आया, पता चला कि तुषार ने 67 प्रतिशत से 10वीं की बोर्ड परीक्षा पास कर ली है।

तुषार ने अपनी मेहनत और आत्मविश्वास से उन लोगों के लिए मिसाल पेश की है जो छोटी-छोटी मुश्किलें आने पर ही जीवन से हार जाते हैं। पिता राजेश विश्वकर्मा बताते हैं कि तुषार ने यह सिद्ध कर दिया कि ‘मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।’

तीन भाई बहनो में तुषार सबसे छोटा है। बाकी दोनों बच्चे सामान्य हैं पर तुषार को जन्म से शारीरिक दिक्कत है। अपने भाई-बहन को स्कूल जाता देख वह भी साथ जाने की जिद करता। पहले उसे घर पर ही पढ़ाने की कोशिश हुई लेकिन उसकी जिद स्कूल जाने की थी, सो परिवार को मानना पड़ा। पहले काफी परेशानी हुई लेकिन फिर अपनी कोशिशों, शिक्षको के प्रोत्साहन से तुषार ने पैरों से लिखना शुरू किया और आज वह पढ़ने वाले बच्चों के लिये मिसाल बन चुका है। राजेश विश्वकर्मा की कड़ी मेहनत और सफलता से विश्वकर्मा समाज के लोगों में प्रसन्नता और गौरव का भाव है। विश्वकर्मा पांचाल ब्राह्मण सभा, लखनऊ के अध्यक्ष अखिलेश मोहन सहित अन्य लोगों ने शुभकामनाएं दी है।

ह, जबाक दश क विकास म कारागरा का हिवलकर, कमल विश्वकमा, शिवराज लाग बड़ा सख्या म उपास्थत रह।

हौसले को नमन: पैरों से लिख कर अपनी तकदीर बदल रहा तुषार विश्वकर्मा

लखनऊ। राजेश विश्वकर्मा के बेटे तुषार विश्वकर्मा के हाथ तो हैं लेकिन पोलियो की वजह से वह हाथ से लिख नहीं सकता। बचपन से ही अन्य बच्चों को देखकर स्कूल जाने की जिद करने लगा। उसकी जिद और जज्बे को देखकर माता पिता ने उसका दाखिला स्कूल में करवा दिया, जहां तुषार अन्य बच्चों को हाथ में पेंसिल पकड़े देखकर कुछ दिन परेशान रहा, लेकिन शिक्षकों के हौसला बधांने पर उसने पैरों से लिखना शुरू किया। धीरे-धीरे उसकी मेहनत रंग लाने लगी और हमेशा ही परीक्षा में अच्छे अंक लाकर अपने माता-पिता का नाम रोशन किया।

सरोजनी नगर के क्रिएटिव कान्वेंट स्कूल से दसवीं की पढ़ाई कर रहा तुषार विश्वकर्मा बंथरा के लाला रामस्वरूप इण्टर कॉलेज में बोर्ड की परीक्षा देने पहुंचा। तुषार का हिंदी का पेपर था और उसे कमरा नंबर 21 में बैठना था। केन्द्र व्यवस्थापक व विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ0 डी0के0 कौशल ने जब इस बच्चे को देखा तो उन्होंने उसकी सुविधा को देखते हुए परीक्षा देने के लिए कमरे के बाहर मेज लगवा दी, जहां तुषार ने बैठकर पेपर देना शुरू कर दिया। हाथों से दिव्यांग तुषार ने पैरों की अंगुलियों में पेन फंसाया और उत्तर पुस्तिका में लिखना शुरू कर दिया। उसे पैरों से लिखता देख विद्यालय में मौजूद हर कोई दंग था। केन्द्र व्यवस्थापक ने बताया कि इस बच्चे को इस तरह परीक्षा देते देख उनके यहां एक शिक्षक ने प्रश्न पत्र और उत्तर पुस्तिका के पेज पलटने में मदद करने की कोशिश की तो उसने यह कहकर उन्हें रोक दिया कि वह यह काम खुद ही कर लेगा। परीक्षा दे रहे तुषार की लिखने की स्पीड भी कम नहीं थी और उसकी राइटिंग भी काफी अच्छी थी। केन्द्र में मौजूद सभी लोग तुषार की इस मेहनत और लगन को देखकर यही कह रहे थे कि वह आगे चलकर जरूर कामयाब होगा।(साभार)

विश्वकर्मा किरण हिन्दी साप्ताहिक 25 जौनपुर, 28 फरवरी, 2019

‘विश्वकर्मा किरण’ पत्रिका ने 28 फरवरी, 2019 के अंक में राजेश विश्वकर्मा के पैर से परीक्षा देने का समाचार प्रकाशित किया था।

श्रेया एसोसिएट्स

Shreya Associates

धावा स्टेट, निकट मटियारी, लखनऊ-226028

विश्वकर्मा समाज के प्रति व विश्वकर्मा समाज के लिये मेरे विचार

Founder & M.D.
Poonam Vishwakrma

एक समय था, जब लोग विश्वकर्मा वंशियों का मान-सम्मान करते थे और करें भी क्यों न भई हम विश्वकर्मा (सृष्टि रचयिता) के वंशज हैं। परन्तु आज तो ऐसा नहीं दिखता, हम पिछड़े हुये हैं, क्योंकि विश्वकर्मा समाज में अशिक्षा है, एकता नहीं है। बड़े ही दु:ख के साथ कहना पड़ता है, कि हमारे विश्वकर्मा समाज में लोग हाथ बढ़ाकर मदद करने के बजाय पैर पकड़कर खींचने का प्रयास करते हैं।

कभी आपसे किसी ने कहा है- तुम कितने लोग हो? हह! तुम क्या कर सकते हो? तुमसे जो हो सकता है, कर लो। देखते हैं कौन है तुम्हारे पीछे।

जब स्वाभिमान को ठेस पहुंचता है, मन घायल होता है, तो बहुत ग्लानि होती है ना।

कभी आपने खुद के प्रश्न किया है, कि हमारी वास्तविकता क्या है, हम सर्वश्रेष्ठ कैसे हैं? हम हैं कौन?

अब यदि आपको लगता है, कि आप अपने लिए, धर्म के अस्तित्व के लिए, विश्वकर्मा वंशियों के अस्तित्व के लिए कुछ कर सकते हैं तो आइए साथ मिलकर ललकार करें, प्रभु विश्वकर्मा की जय जयकार करें।

मैं पूनम विश्वकर्मा फाउण्डर ऑफ श्रेया एसोसिएट्स, मैं व्यवहारिक रूप से व अपने फर्म के माध्यम से रोजगार क्षेत्र में विश्वकर्मा समाज के लोगों को प्राथमिकता देती हूं। मेरा उद्देश्य विश्वकर्मा समाज को आगे बढ़ाना है, इसके लिए मैंने निरन्तर व तत्पर रूप से कार्य किया है, विश्वकर्मा समाज में जरुरतमंद की मदद भी किया व आगे भी करती रहूँगी।

विश्वकर्मा समाज के प्रति मेरे उद्देश्य की पूर्ति के लिए परिवार के रुप में सहयोगी/ भागीदार बनें, क्योंकि हम सब एक परिवार हैं।

यदि आपके धमनियों में प्रभु विश्वकर्मा का रक्त है तो एकता की शक्ति को पहचानिए, भेदभाव खत्म कीजिए, शिक्षित बनिए, समाज में विश्वकर्मा परिवारों से मेल जोल/परिचय/ पहचान बढ़ाइए, किसी विश्वकर्मा परिवार के दु:ख की घड़ी में अन्य विश्वकर्मा परिवारों व अपने स्वयं से जो मदद कर सकते हैं, कीजिए।

एक बात याद रखिये, आज आप विश्वकर्मा समाज/परिवार के लिए खड़े हैं, तो कल व अनन्त काल तक विश्वकर्मा समाज/परिवार आपके मदद के लिए खड़ा रहेगा। अत: अपने पांव पसारिये। अनेक विश्वकर्मा, संगठन अध्यक्ष, राजनेता, कार्यकर्ता, डॉक्टर, समाजसेवक, अधिकारी के रुप में विश्वकर्मा समाज को और बड़ा बनाने में प्रयासरत हैं, आप भी प्रयास कीजिए, आपका योगदान महत्वपूर्ण है।

आप विश्वकर्मा (सृष्टि रचयिता) के वंशज हैं, आप कुछ भी कर सकते हैं।

Poonam Vishwakarma

Founder & M.D.
Poonam Vishwakrma

shreyaassociates.com +91 9628545000 +91 7897060124 shreyaassociates913@gmail.com
facebook.com/shreyaassociateslko Shreya Associates linkedin.com/in/shreyaassociateslko

बनवाएँ अपने सपनों का घर

हमारे यहाँ सभी प्रकार के भवन के नक्शे एवं निर्माण का कार्य कुशल इंजीनियरों के देखरेख में कान्ट्रेक्ट बेस पर किया जाता है।

हमारी सेवाएं

- ★ डिजाइन, ड्राइंग (नक्शा), इस्टीमेट, वैल्युवेशन।
- ★ सभी सिविल कंस्ट्रक्शन वर्क एक्सटीरियर व इन्टीरियर डिजाइन के साथ।
- ★ एडवाइजर एडवोकेट्स
- ★ 600 वर्गफुट एरिया का ए.सी. हॉल पार्टी/मीटिंग एवं अन्य कार्यक्रम हेतु 24 घंटे उपलब्ध है।

एक बार सेवा का मौका अवश्य दें।

सम्पर्क करें

SHREYA ASSOCIATES

Plot No. 310, Dhawa State, Goyala, Chinhat, Lucknow-226028

E-mail : shreyaassociates913@gmail.com, Website : www.shreyaassociates.com

Mob. 9628545000, 7897060124

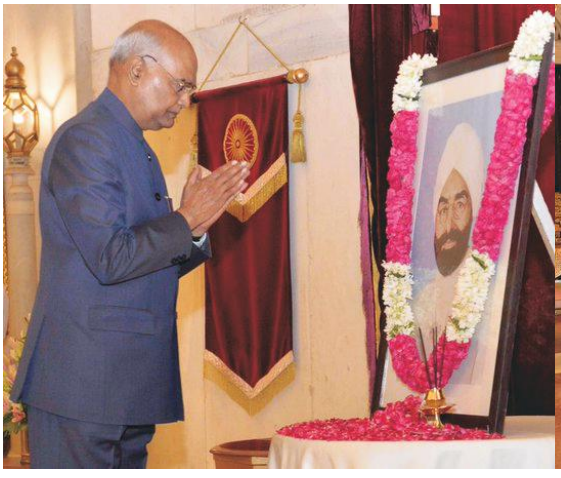

भारत के पूर्व राष्ट्रपति स्व0 ज्ञानी जैल सिंह के 103वें जन्मदिवस पर राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली में श्रद्धांजलि अर्पित करते हुये राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद। इस अवसर पर ज्ञानी जी के पौत्र इन्द्रजीत सिंह व अन्य पारिवारिक सदस्य उपस्थित रहे।

लड़की का अपना घर

लेखक- स्नेहा झा (एम0ए0, बी0एड0)
सिकन्दरपुर, मिरजानहाट, भागलपुर (बिहार)
सम्पर्क सूत्र- 7903991675

न जाने किसे कहते हैं अपना घर
जहां नन्हीं सी परी के रूप में जन्म लिया,
जहां बड़े नाजों से पली-बढ़ी
सोचती हुई कि यह है अपना घर।

जहां बड़ी हुई सोचती-सोचती
कि यह है मेरा अपना घर,
पर एक दिन कहा गया कि
ससुराल है तुम्हारा अपना घर।

फिर पिता घर से पराई होकर पहुंची पति के घर
जहां सुनने को अक्सर मिलता,
यह नहीं है तुम्हारा घर
यह है पिता समान ससुर का घर।

न जानें कहां है मेरा अपना घर
कहां जाऊं, किसे बताऊं कौन सा है मेरा अपना घर,
जहां समय-समय पर मिलते रहते ताने
कि चली जाओ तुम अपने घर।

पर न जानें कहां मैं जाऊं
जो हो मेरा अपना घर,
फिर एक दिन मैंने सोचा
फिर एक दिन मैंने सोचा।

खुद ही मेहनत करके
इस धरती पर बनाऊंगी एक छोटी सी कुटिया,
और ये आशियाना ही होगा
मेरा अपना घर।।

नारी की लाचारी

नारी-नारी करते दुनिया सारी
पर यहां नारी है बेचारी
जहां कल्पना ना हो स्वर्ग रूपी घर की बिन नारी,
फिर भी कहते हैं सारी दुनिया इसे बेचारी।

नारी शिक्षा का उत्थान करते सरकार हमारी
फिर भी हर जगह असुरक्षित है नारी,
नारी बनाए संपूर्ण शिक्षित परिवार, फिर भी
नारी को है लाचारी।

नारी है सत्य का रूप सृष्टि की अवतारी
फिर भी इस पर होते हैं अत्याचार भारी,
देश में नारी पर आज भी शोषण जारी
यही तो है नारी की लाचारी।

जहां चांद पर पहुंच गई है नारी
साथ ही साथ देश चलाने की क्षमता
भी रखती है नारी,
फिर भी इसकी है अनेकों लाचारी।

मां, बहन, पुत्री, पत्नी के रूप में सेवा करती है नारी
सीता जैसी अग्निपरीक्षा भी देती है नारी,
पर रावण जैसे पुरुषों की संख्या आज भी है जारी
जहां नारी पुरुषों वाले सारे आविष्कारों की भी है अधिकारी,
फिर भी इसकी है लाचारी।।

भाजपा कर रही पिछड़े वर्ग को बांटने का काम- राम आसरे विश्वकर्मा

लखनऊ। भाजपा पिछड़े वर्ग के लोगों को बांटने और उन्हें गुमराह करने की राजनीति कर रही है। विश्वकर्मा समाज को भाजपा की साजिश से बचाना होगा। उक्त बातें विश्वकर्मा मन्दिर मकबूलगंज के सभागार में आयोजित अखिल भारतीय विश्वकर्मा शिल्पकार महासभा की बैठक में प्रदेश पदाधिकारियों, जिलाध्यक्षों, महानगर अध्यक्षों, युवा अध्यक्षों तथा विश्वकर्मा ब्रिगेड के जिला अध्यक्षों को सम्बोधित करते हुए महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष तथा पूर्वमंत्री रामआसरे विश्वकर्मा ने कही। श्री विश्वकर्मा ने कहा कि महासभा एक सामाजिक संगठन है और महासभा के पदाधिकारी को कभी गुमराह होने की जरूरत नहीं है। संगठन को अपने राष्ट्रीय नेतृत्व पर भरोसा और विश्वास करना चाहिये। हम सरकार बनाने और बिगाड़ने की राजनीति नहीं बल्कि विश्वकर्मा शिल्पकार समाज और अतिपिछड़े वर्गों को एकजुट करने, उनकी राजनैतिक ताकत बनाने, उन्हें उनका वाजिब अधिकार और सम्मान दिलाने की लड़ाई लड़ रहे हैं। यही कारण है अति पिछड़ा विश्वकर्मा समाज हम पर भरोसा करता है। हम उनके विश्वास को कभी नहीं तोड़ेंगे और उनके उत्पीड़न और अत्याचार की लड़ाई हमेशा लड़ते रहेंगे।

श्री विश्वकर्मा ने महासभा के संगठन को सक्रिय करने, जनपदवार जिला कमेटियों को मजबूत करने, प्रतिमाह जनपदों की मासिक बैठक करने तथा समाज के उत्पीड़न अत्याचार पर तत्काल संघर्ष करने पर जोर दिया। राष्ट्रीय अध्यक्ष रामआसरे विश्वकर्मा ने लोकसभा के चुनाव में सपा-बसपा गठबन्धन के प्रत्याशियों के हार की समीक्षा की रिपोर्ट सभी जनपदों से लिया और अगले 12 विधानसभाओं के उपचुनाव में भी विश्वकर्मा समाज के

पदाधिकारियों को अभी से जुट जाने को कहा। विधानसभा चुनाव 2022 में पुनः सपा की सरकार बनाने का लक्ष्य अभी से तय करके अपनी रणनीति बनाने और अभी से उस पर काम करने का निर्देश दिया।

बैठक की अध्यक्षता अच्छेलाल विश्वकर्मा प्रदेश अध्यक्ष तथा संचालन राकेश विश्वकर्मा प्रदेश महासचिव ने किया। बैठक को राष्ट्रीय महासचिव राजेश विश्वकर्मा, प्रदेश उपाध्यक्ष रामअवतार विश्वकर्मा, रामपाल विश्वकर्मा प्रदेश सचिव, रामअवतार विश्वकर्मा प्रदेश सचिव, रमेश शर्मा जिलाध्यक्ष औरैया, मुकेश शर्मा औरैया, अवधेश शमा, कपूर चन्द शर्मा, जिलाध्यक्ष मऊ हरिनारायण विश्वकर्मा, सूर्यनाथ विश्वकर्मा, रतनपाल शर्मा, प्रदेश सचिव महेंद्र विश्वकर्मा, प्रदेश सचिव सियाराम शर्मा, प्रदेश सचिव दान किशोर विश्वकर्मा, महात्मा विश्वकर्मा आजमगढ़, रामबाबू विश्वकर्मा, जिलाध्यक्ष बांदा मनबोधन विश्वकर्मा, केपी विश्वकर्मा, सौरभ विश्वकर्मा, अध्यक्ष विश्वकर्मा ब्रिगेड बांदा शशांक विश्वकर्मा, रामश्रय विश्वकर्मा आजमगढ़, ममता शर्मा कन्नौज, सुरेश धीमान मुजफ्फरनगर, चंद्रमा विश्वकर्मा बलिया, गौरव कृष्ण विश्वकर्मा बलिया, राजेंद्र बाबू विश्वकर्मा जालौन, शिवम ओझा जालौन, रामनिवास विश्वकर्मा, अमित विश्वकर्मा, राहुल शर्मा महराजगंज, छोटे सिंह विश्वकर्मा कानपुर देहात, अभय विश्वकर्मा, सत्यनारायण विश्वकर्मा, शिव शंकर शर्मा, विजय विश्वकर्मा, नीरज शर्मा, सुनील विश्वकर्मा, ओम प्रकाश शर्मा,

संगठन को अपने राष्ट्रीय नेतृत्व पर भरोसा और विश्वास करना चाहिये। हम सरकार बनाने और बिगाड़ने की राजनीति नहीं बल्कि विश्वकर्मा शिल्पकार समाज और अतिपिछड़े वर्गों को एकजुट करने, उनकी राजनैतिक ताकत बनाने, उन्हें उनका वाजिब अधिकार और सम्मान दिलाने की लड़ाई लड़ रहे हैं।

फर्रुखाबाद, राजकुमार शर्मा, शिव शंकर शर्मा, अरुणपाल शर्मा, नरेंद्र विश्वकर्मा, आशीष शर्मा, रवि विश्वकर्मा, विश्वकर्मा ब्रिगेड जिलाध्यक्ष औरैया रवि शर्मा, भरत शर्मा, प्रभात कुमार शर्मा, प्रियंक शर्मा, अरविंद कुमार विश्वकर्मा, विकास विश्वकर्मा, प्रवीण विश्वकर्मा छात्र नेता गाजीपुर शिवम विश्वकर्मा, विश्वकर्मा ब्रिगेड जिलाध्यक्ष संदीप शैलेंद्र विश्वकर्मा, दीपक कुमार विश्वकर्मा, शेखर विश्वकर्मा, मनु विश्वकर्मा, प्रेमनाथ विश्वकर्मा जिलाध्यक्ष फतेहपुर, डॉक्टर सतीश चंद शर्मा बरेली, चंदन विश्वकर्मा वाराणसी, सौरभ विश्वकर्मा सभासद, चंदन विश्वकर्मा सभासद गोरखपुर, बृजेश कुमार, मदन मोहन शर्मा, महेश विश्वकर्मा जिलाध्यक्ष जालौन, शिवम ओझा, रमेश चंद्र शर्मा, बलिराम विश्वकर्मा, राजेश विश्वकर्मा जिलाध्यक्ष बलिया, राजू विश्वकर्मा, रामनिरंजन विश्वकर्मा, सोचन राम विश्वकर्मा जिलाध्यक्ष जौनपुर, शिवम विश्वकर्मा, जय शंकर शर्मा, अनिल कुमार विश्वकर्मा, डॉक्टर बृजेश विश्वकर्मा जिलाध्यक्ष सुल्तानपुर, दयाशंकर विश्वकर्मा, सुभाष चंद्र विश्वकर्मा, राजेश विश्वकर्मा, परशुराम विश्वकर्मा, महातम विश्वकर्मा, रविंद्र विश्वकर्मा, विनोद, विष्णु कुमार विश्वकर्मा, सत्यम विश्वकर्मा, शिव प्रसाद विश्वकर्मा, दयाल शरण शर्मा, दिवाकर विश्वकर्मा, विश्वकर्मा ब्रिगेड अध्यक्ष बहराईच विजय कुमार विश्वकर्मा, दीपक कुमार विश्वकर्मा, राजेंद्र विश्वकर्मा, संतोष विश्वकर्मा, राजू विश्वकर्मा सहित आदि लोगों ने बैठक में अपने विचार रखे।

-शिव प्रकाश विश्वकर्मा

जांगिड़ ब्राह्मण महासभा ने मनाया तृतीय वार्षिकोत्सव

फरीदाबाद। अखिल भारतीय जांगिड़ ब्राह्मण महासभा, शाखा सभा ओल्ड फरीदाबाद का तृतीय वार्षिकोत्सव समारोह सामुदायिक भवन सेक्टर 29 में धूमधाम से मनाया गया। इस मौके पर मुख्य अतिथि के रूप में केन्द्रीय राज्यमंत्री चौधरी कृष्णपाल गुर्जर मौजूद थे। इसके अलावा विश्वकर्मा महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष रतनलाल विश्वकर्मा, राष्ट्रीय महामंत्री रमेश जांगड़ा विश्वकर्मा, राष्ट्रीय महिला अध्यक्ष पुष्पा विश्वकर्मा व सुभाष पांचाल विश्वकर्मा उपस्थित थे।

कार्यक्रम का शुभारंभ गणमान्य अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। इसके उपरांत स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर अखिल भारतीय जांगिड़ ब्राह्मण महासभा के पदाधिकारियों ने चौधरी कृष्णपाल गुर्जर के दोबारा केन्द्रीय राज्यमंत्री बनने पर उन्हें सम्मानित किया। इस मौके पर चौधरी कृष्णपाल गुर्जर ने कहा कि विश्वकर्मा समाज ने हमेशा देश की तरक्की में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने कहा कि विश्वकर्मा बंधुओं ने अपनी मेहनत और काबिलियत के बलबूते देश ही नहीं विदेशों में भी अपनी अलग पहचान बनाई है।

राष्ट्रीय अध्यक्ष रतन लाल विश्वकर्मा ने कहा कि विश्वकर्मा समाज ने पूरी दुनिया में अपना डंका बजाया है। विश्वकर्मा समाज ने नये-नये आविष्कारों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने कहा कि उनका प्रमुख लक्ष्य समाज में एकता और भाईचारा कायम करना है ताकि सभी लोग बिना किसी भेदभाव के समय-समय पर एक दूसरे के सुख-दुःख में मदद कर सकें।

इस अवसर पर हनुमान प्रसाद जांगड़ा, टेकचंद शर्मा, मदनलाल जांगड़ा, उधम सिंह, भूप सिंह, लालचंद, वेदप्रकाश, हरदत्त जागड़ा, सुभाष पांचाल विश्वकर्मा, दिनेश टॉक, सुरेश चंद जांगिड़, ओम प्रकाश जांगिड़, रूपचंद जांगिड़, दिलीप विश्वकर्मा के साथ ही काफी संख्या में सामाजिक बंधु उपस्थित थे।

श्री विश्वकर्मा चैरिटेबल ट्रस्ट (रेड ब्रिगेड) जौनपुर ने मन्दिर में दान की कुर्सियां

जौनपुर। जनपद की अग्रणी सामाजिक संस्था श्री विश्वकर्मा चैरिटेबल ट्रस्ट (रेड ब्रिगेड) जौनपुर द्वारा दिनांक 03 जुलाई, 2019 को श्री विश्वकर्मा धर्मशाला, त्रिलोचन महादेव को 50 कुर्सी दान स्वरूप प्रदान की गयी है। श्री विश्वकर्मा मंदिर समिति, त्रिलोचन महादेव जौनपुर ने श्री विश्वकर्मा चैरिटेबल ट्रस्ट (रेड ब्रिगेड) जौनपुर के अध्यक्ष राजेश विश्वकर्मा, सचिव डॉ0 रविन्द्र प्रताप विश्वकर्मा व ट्रस्टी डॉ0 पी0के0 संतोषी, भानु प्रकाश विश्वकर्मा सहित सभी पदाधिकारी व सदस्यों को इस सराहनीय कार्य के लिए धन्यवाद दिया है।

अखिल भारतीय विश्वकर्मा महासभा झारखण्ड प्रदेश की बैठक सम्पन्न

रांची। अखिल भारतीय विश्वकर्मा महासभा, झारखण्ड प्रदेश की आवश्यक बैठक हरमु स्थित होटल क्रेडल इन के सभागार में सम्पन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता सत्यनारायण शर्मा ने किया। विश्वकर्मा समाज के पांचो वंशज लौहकार, काष्ठकार, ताम्रकार, शिल्पकार और स्वर्णकार के प्रतिनिधियों ने बैठक में भाग लेकर समाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं अन्य विषयों पर गहन विचार विमर्श किया और वंशजो को एक मंच पर लाने हेतु सभी ने सहमती दिया। समाज को आगे बढाने के लिए झारखण्ड प्रदेश स्तर पर अखिल भारतीय विश्वकर्मा महासभा के दिशा निर्देश में कार्य करने पर एक मत हुए।

बैठक मे सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि 12 लोगों का एक संयोजक मण्डल बनाया जाय, जिसमें एक मुख्य संयोजक होगा। इस तरह झारखण्ड राज्य में संगठन को मजबूत बनाने में आसानी होगी। सर्वसम्मति से लिये गये निर्णय के क्रम में 11 संयोजक व एक मुख्य संयोजक के नाम तय किये गये जो इस प्रकार है:-

मुख्य संयोजक- डा0 दिलीप सोनी, संयोजक- दिनेश प्रजापति, ज्योति मथारू, बैजनाथ आनन्द, भीम शर्मा, अशोक विश्वकर्मा, विकास ताम्रकार, विरेन्द्र वर्मा, विक्रान्त विश्वकर्मा, विनोद कुमार शर्मा, शशि प्रकाश वर्मा, पी0 प्रजापति।

संयोजक मण्डल के सभी सदस्यों को समाज से 10-10 लोगों को जोड़ने की जिम्मेवारी दी गई। साथ ही यह भी निर्णय लिया गया कि अखिल भारतीय विश्वकर्मा महासभा झारखण्ड प्रदेश शाखा का आजीवन सदस्य बनने के लिए 1100/- रू0 एवं वार्षिक सदस्य बनने के लिए 100/- रू0 का शुल्क देकर सदस्य बन सकते हैं। अखिल भारतीय विश्वकर्मा महासभा के संविधान के अनुरूप झारखण्ड में विश्वकर्मा वंशज के सवांगीण विकास में गति देने का निर्णय लिया गया।

इस बैठक में सभी प्रतिनिधियों ने अपना-अपना विचार दिये। बैठक का संचालन विक्रान्त विश्वकर्मा ने किया और धन्यवाद ज्ञापन अमरजीत सिंह ने किया। बैठक को सफल बनाने मे राकेश कुमार शर्मा, गोपाल प्रजापति, विनय ताम्रकार, विनोद कुमार शर्मा, दिनेश प्रजापति, डा0 दिलीप सोनी का महत्वपूर्ण योगदान रहा। इस अवसर पर महासभा से जुड़े काफी संख्या में समाज के लोग उपस्थित रहे।

Bhavya Decor
Interior's HUB
MODULAR KITCHEN & WARDROBE'S
E-mail: bhavyadecor@yahoo.com , www.bhavyadecor.com
90445 00999

अखिल भारतीय जांगिड़ ब्राह्मण महासभा सांगानेर शाखा का शपथ ग्रहण सम्पन्न

जयपुर। अखिल भारतीय जांगिड़ ब्राह्मण महासभा शाखा सभा-रामपुर रोड़, सांगानेर की नवगठित कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण जयपुर में सम्पन्न हुआ। शपथ ग्रहण कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महासभा के राष्ट्रीय प्रधान रविशंकर जांगिड़ रहे।

नवगठित कार्यकारिणी के सभी पदाधिकारियों और सदस्यों को शपथ दिलाई गई। विशिष्ट अतिथि के रूप में जयपुर जिलाध्यक्ष हरिशंकर जांगिड़ (जिला अध्यक्ष जयपुर शहर कांग्रेस ओबीसी विभाग) तथा युवा नेता सुनील जांगिड़ थे।

वक्ताओं ने सामाजिक जागरूकता, एकता और शिक्षा पर विशेष जोर दिया। नवगठित कार्यकारिणी द्वारा सभी अतिथियों का सम्मान किया गया। इस अवसर पर पत्रकार आर0पी0 शर्मा, हरीराम जांगिड़, रोहिताश जांगिड़ सहित सैकड़ो लोग उपस्थित रहे।

कौशल्या जांगिड़ का चयन तहसीलदार नियुक्त

राजस्थान तहसीलदार सेवा में जांगिड़ समाज की बेटी कौशिल्या जांगिड़ का चयन हुआ है। उनकी नियुक्ति पर सामाजिक संगठनों ने बधाई प्रेषित किया है।

समाज में शिक्षा और एकता पर जोर दें- सुनील जांगिड़

शपथ ग्रहण समारोह में सम्मानित युवा नेता सुनील जांगिड़ ने समाज में शिक्षा और एकता पर जोर देने की अपील किया है। उन्होंने कहा कि सामाजिक विकास के लिये यह महत्वपूर्ण है।

पार्थ आंखों का अस्पताल एवं रेटिना सेंटर-एक वरदान

रिपोर्ट- गजेन्द्र शर्मा

लखनऊ। रायबरेली रोड पर मवैया में स्थित आंख अस्पताल (पार्थ हॉस्पिटल) सभी आधुनिक उपकरणों से युक्त है और यहां के आसपास ग्रामीण लोगों के लिए वरदान साबित हो रहा है। इसके निर्देशक डॉ0 शशि शर्मा ने एमबीबीएस, एमएस (केजीएमयू) एवं डीएनबी, एफबीआरएस (दिल्ली) से डिग्री प्राप्त किया है। डिग्री प्राप्त करने के पश्चात दिल्ली के वेणु आई इन्स्टीट्यूट, वाराणसी के एएसजी आई हॉस्पिटल तथा लखनऊ व कानपुर के आँखो के अस्पतालों के विभिन्न पदों पर रहकर मरीजों के संतोषजनक एवं सफल मोतियाबिंद और परदे का इलाज किया। डॉ0 शर्मा इस छोटे से अंतराल में विदेशों में भी नेत्र चिकित्सक के रूप में जाने और पहचाने जाते हैं। अब लोगों में लोकप्रियता को ध्यान में रखते हुए यहां के शहरी और ग्रामीण लोगों की सेवा करने का निश्चय किया है। डॉक्टर शर्मा का सपना है कि पूरे उत्तर प्रदेश में ही नहीं अपितु समूचे भारत में आंख की समस्याओं से जूझ रही जनसंख्या को राहत प्रदान करें। ऐसा लगता है कि डॉक्टर शर्मा को जैसे कुदरत ने कुछ विशेष दक्षता प्रदान किया हो। हाथ लगाते ही मरीज बहुत ही आराम महसूस करता है, जैसे प्रकृति ने फिर से जीवन में रोशनी भर दिया हो। इसको देखते हुए जनता का विश्वास और अपेक्षाएं बढ़ती जा रही हैं।

अ0भा0 विश्वकर्मा शिल्पकार महासभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष व सपा पिछड़ा वर्ग प्रकोष्ठ, उ0प्र0 के प्रदेश सचिव इं0 विजेश शर्मा के रुड़की, उत्तराखंड आगमन पर संत योगी मौनी बाबा औघड़नाथ, जगतगुरु विश्वकर्मा शंकराचार्य एवं महामंडलेश्वर महंत बाबा योगेन्द्र नाथ, महंत योगी भुपेंद्र नाथ, आचार्य महंत राकेश नाथ द्वारा सम्मानित किया गया। श्री शर्मा ने सभी संतजनों का चरण स्पर्श कर आशिर्वाद प्राप्त किया।

समाज सेवा के लिये सदैव तत्पर

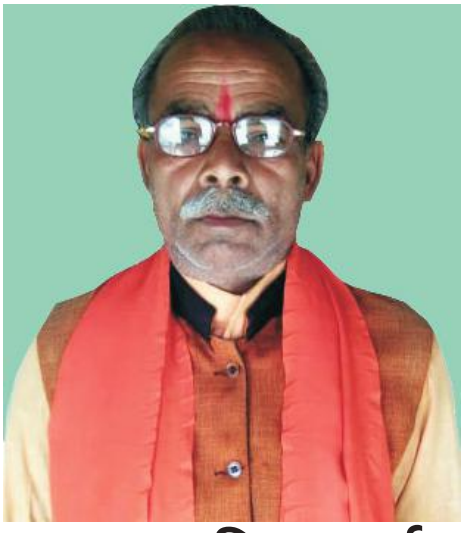

प्रह्लाद विश्वकर्मा

जिला अध्यक्ष

विश्व हिन्दू परिषद, अम्बेडकरनगर

मोबाइल : 9918215825

शिल्पकला में राम आवतार विश्वकर्मा ने बनाई पहचान

शिल्पकार
राम आवतार विश्वकर्मा
सिकन्दराबाद, बुलन्दशहर
मो0- 8449056060

बुलन्दशहर। आधुनिक युग में प्राचीन कला का दर्शन मात्र एक शिल्पकार के द्वारा ही हो सकता है। बुलन्दशहर जिले के सिकन्दराबाद निवासी शिल्पकार राम अवतार विश्वकर्मा पुत्र रामचंद्र एक ऐसे ही परिवार से हैं जो कई पुस्तों से शिल्पकारी का कार्य करते आ रहे हैं।

र७ाम अवतार के बाबा मंगत राम बहुत उम्दा शिल्पकार थे। राम अवतार ने भी अपने बाबा से ही शिल्पकला का ज्ञान लिया है और उन्हीं को गुरू भी माना है। पोते होने का संबंध तो है ही, गुरु भी बाबा मंगतराम हैं। पैतृक कार्य होने के कारण एक परिवार समाज की सेवा में भगवान महावीर का रथ बनाने का कार्य अपनी शिल्पकला और बड़ी कुशलता से करता आ रहा है। इनके द्वारा बनाए गए रथ सिकन्दराबाद, खुर्जा, जेवर, छपरौली, इटावा, खेकड़ा आदि जगहों पर इनकी शिल्पकला की

प्रशंसा कर रहे हैं। राम अवतार के गुरू व बाबा मंगतराम की कला का प्रदर्शन रामलीला में ज्यादा हुआ करती थी। उन्होंने अपनी शिल्पकला का लोहा मनवाया था।

अब उनके पोते राम अवतार विश्वकर्मा इस कार्य को कर रहे हैं। राम अवतार के बनाए मुखोटे बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर, स्वामी विवेकानंद, महर्षि दयानंद, महात्मा बुद्ध जैसे महापुरूष के साथ ही हिरण, शेर व अन्य जानवरों, की सुन्दर कृति बनाने में महारत प्राप्त है।

राम अवतार विश्वकर्मा शिल्पकला के क्षेत्र में अपनी अद्भुत कला का प्रदर्शन कर रहे हैं। लकड़ी से बनाई गई उनकी कृतियों की काफी सराहना होती है। उन्हें कई प्रशंसा पत्र मिल चुके हैं।

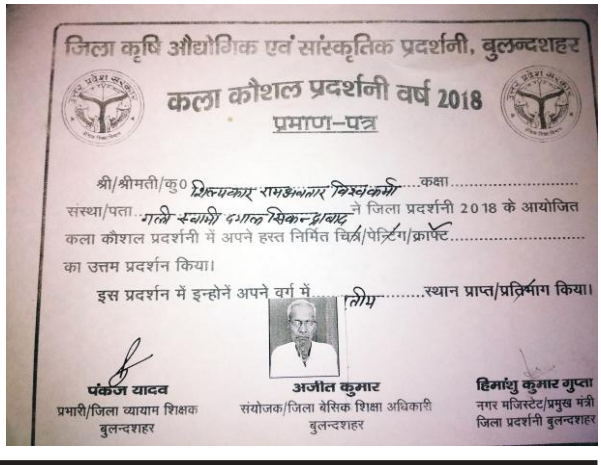

जिला कृषि औद्योगिक एवं सांस्कृतिक प्रदर्शनी, बुलन्दशहर
कला कौशल प्रदर्शनी वर्ष 2018
प्रमाण-पत्र

श्री/श्रीमती/कु0 शिल्पकार रामअवतार विश्वकर्मा ......कक्षा............
संस्था/पता गली स्वामी दयाल सिकन्द्राबाद ने जिला प्रदर्शनी 2018 के आयोजित कला कौशल प्रदर्शनी में अपने हस्त निर्मित चित्र/पेंटिंग/क्राफ्ट.............
का उत्तम प्रदर्शन किया।
इस प्रदर्शन में इन्होंने अपने वर्ग में ......तीय......स्थान प्राप्त/प्रतिभाग किया।

पंकज यादव
प्रभारी/जिला व्यायाम शिक्षक
बुलन्दशहर

अजीत कुमार
संयोजक/जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी
बुलन्दशहर

हिमांशु कुमार गुप्ता
नगर मजिस्टेट/प्रमुख मंत्री
जिला प्रदर्शनी बुलन्दशहर

पांचवीं पास शिवराज पांचाल का कारनामा

बाइक के इंजन से बनाया विमान

भीलवाड़ा। राजस्थान प्रदेश के भीलवाड़ा जिले के जहाजपुर में एक युवक ने ऐसा कारनामा किया है कि वह यहां चर्चा के केन्द्र में है। उसने बाइक के इंजन का इस्तेमाल करते हुए एक 'विमान' बनाया है, जिसमें दो लोगों के बैठने की व्यवस्था भी है। हालांकि उसके द्वारा निर्मित विमान को स्थानीय प्रशासन ने सुरक्षा कारणों से उड़ान भरने की मंजूरी नहीं दी और उसे जब्त कर लिया। युवक ने गागदी बांध के पास अपने विमान को ट्रायल के तौर पर उड़ाने की योजना बनाई थी।

बाइक के इंजन से 'विमान' बनाने का कारनामा–

बताया जाता है कि शिवराज खिलौना बना रहा था, तभी उसके मन में विमान बनाने का ख्याल आया। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, उसने करीब 20 फीट लंबे पंख वाले एक 15 फीट लंबे विमान का निर्माण किया और इस पर कपड़े का कवर चढ़ा दिया। इसे बनाने में उसे 6 महीने का समय लगा और इस पर करीब 35-40 हजार रुपये खर्च आया। विमान में लोहे के तीन पहिये लगे हैं और इसमें दो लोगों के बैठने की व्यवस्था है और यह सीट भी लोहे से ही बनाई गई है। ऐसे में प्रशासन को अंदेशा था कि अगर विमान उड़ान भर लेता है तो इससे किसी दुर्घटना की स्थिति में नुकसान हो सकता है। ऐसे में उसने विमान को उड़ान भरने की अनुमति नहीं दी और उसे जब्त कर लिया।

ताज्जुब की बात यह है कि विमान बनाने वाले युवक ने इसके लिए कोई औपचारिक शिक्षा भी नहीं ली है, बल्कि वह महज पांचवीं पास है और बेल्डिंग का काम करता है। शिवराज को उम्मीद है कि वह एक दिन जरूर कामयाब होगा।

40 हजार महिलाओं को पछाड़ भिलाई की शिवानी विश्वकर्मा पहुंची मिसेज वर्ल्डवाइड फाइनल में

भिलाई। शहर की बेटी शिवानी विश्वकर्मा का चयन मिसेज वर्ल्डवाइड स्पर्धा के फाइनल राउण्ड के लिए हुआ है। शादी के बाद पुणे में रह रही शिवानी को मॉडलिंग का शौक बचपन से ही था, लेकिन शादी के बाद मिला यह मौका किसी सपने से कम नहीं। इस स्पर्धा के लिए भारत सहित अन्य कई देशों से करीब 40 हजार से ज्यादा महिलाओं ने ऑडिशन दिया था। जिसमें से फाइनल राउण्ड के लिए 172 महिलाओं को चुना गया।

प्रतियोगिता का फाइनल राउण्ड ग्रीस में होगा। शिवानी ने भिलाई से ग्रेजुएशन तक की पढ़ाई की और 2012 में वह मुम्बई चली गई जहां उसने मास्टर ऑफ इलेक्ट्रानिक्स मीडिया का कोर्स किया। डेढ़ साल पहले ही उसकी शादी कस्तुभ बोरवानकर के साथ हुई और वह मुम्बई में ही सैटेल हो गई।

हाल ही में हुई थी ट्रेनिंग–

शिवानी के अनुसार 172 प्रतिभागियों में शामिल होने के बाद पिछले दिनों आगरा में आयोजकों ने चार दिन की ग्रुमिंग क्लास भी रखी थी जिसमें फाइनलिस्ट को कैटवॉक, मेकअप, न्यूट्रीशन, हेल्थ, डाइट, आदि के बारे में बताया गया। जिसमें एक्सपर्ट के साथ डॉक्टर भी मौजूद थे। फाइनल राउण्ड

अक्टूबर में होगा इसलिए उन्हें 6 महीने का समय दिया गया है ताकि वे खुद को और भी इंप्रूव कर सकें।

डांस का शौक–

शिवानी ने बताया कि उसे डांस और मॉडलिंग का बचपन से ही शौक रहा है, लेकिन शादी के बाद इस तरह का प्लेटफार्म मिलना एक अलग ही अनुभव है। उसने बताया कि उनके पति कस्तुभ ने इस स्पर्धा में हिस्सा लेने के लिये काफी प्रेरित किया। साथ ही उनकी मां लक्ष्मी विश्वकर्मा का भी साथ मिल रहा है।

शिवानी की सफलता पर लोगों ने बधाई दिया है साथ ही फाइनल में जीत की शुभकामनाएं भी दिया है।

वनिषा जांगिड़ को मिला आउटस्टेडिंग डिजाइन कलेक्शन अवार्ड–2019

जयपुर। मानसरोवर स्थित आईआईएस यूनिवर्सिटी में आयोजित भारतीय परिधानों के फैशन शो में वनिषा जांगिड़ ने आउटस्टेडिंग डिजाइन कलेक्शन अवार्ड–2019 प्राप्त किया है। उल्लेखनीय है कि आईआईएस यूनिवर्सिटी द्वारा गत 10 वर्षो से भारतीय परिधानों का फैशन शो आयोजित किया जा रहा है। इस शो में छात्रओं द्वारा डिजाइन किये गये भारतीय एवं पाश्चात्य शैली के परिधान प्रस्तुत किये जाते है।

पति ने कोच बन दिव्यांग पत्नी को सिखाए गुर अब देश का नाम कर रहीं रौशन

हिसार। हिसार के गांव नाड़ा की कुसुम पांचाल ने तीन साल में ही कई बार गोल्ड और कांस्य मेडल जीतकर क्षेत्र व देश का नाम रौशन किया है। महिला होने के साथ दोनों पैर से 80 प्रतिशत दिव्यांग होते हुए भी कुसुम ने हिम्मत दिखाते हुए हर मुकाम को हासिल किया है।

कुसुम रोहतक जिले के गांव डोभ की रहने वाली हैं। कुसुम ने बीएड, एमफिल और पीएचडी तक की पढ़ाई की है। अपने गांव डोभ की सबसे पढ़ी लिखी लड़की का खिताब भी इन्हीं के नाम है। फिलहाल कुसुम नरवाना ब्लॉक में लाइब्रेरियन की पोस्ट पर कार्यरत हैं।

कुसुम ने खेल के प्रति अपनी रुचि को मन में ही मार लिया था। दिव्यांग होने की वजह से वह हिम्मत नहीं जुटा पा रही थी। उसके दो भाई सुनील व कुलदीप अपनी बहन को ट्रायल के लिए लेकर गए और उनका खेल के लिए चयन हो गया। पहली बार खेल के लिए घर से बाहर निकली और 2016 मे ही पैरा एथलेटिक्स में ज्वैलीन थ्रो में कांस्य पदक हासिल किया।

21 नवम्बर 2016 को नारनौंद के नाड़ा गांव के संजय से कुसुम की शादी हो गई। शादी के बाद संजय ने भी अपनी पत्नी का खेल में हौसला बढ़ाया। संजय ने खुद ही कुसुम का कोच बन उसे आगे की ट्रेनिंग देनी शुरू की। दूसरी बार में जयपुर में हुई पैरा एथलेटिक्स नेशनल चैंपियनशिप में डिस्कस थ्रो तथा शॉटपुट मुकाबलों में गोल्ड मेडल हासिल किए। उसके बाद मार्च 2018 में पंचकूला में डिस्कस थ्रो में गोल्ड और फिर जुलाई 2018 में ट्यूनिशिया में आयोजित इंटरनेशनल प्रतियोगिता में वर्ल्ड पैरा एथलेटिक्स चैंपियनशिप में कांस्य पदक हासिल किया।

भाई और पति के सहयोग से किया हर मुकाम हासिल–

कुसुम ने शादी से पहले दो भाइयों की लाडली बहन होने के चलते उन्हें भरपूर सहयोग मिला और शादी के बाद पति ने कोच की भूमिका भी निभाई। पति संजय ने कुसुम को हर तरह से सहयोग किया और इस मुकाम तक पहुंचाने में कुसुम भी अपने पति को ही श्रेय दे रही हैं। उन्होंने कहा कि संजय ने दिव्यांग होते हुए भी उससे शादी की और भरपूर सहयोग किया।

इनसे हो चुकी हैं सम्मानित–

खेल मंत्री अनिल विज, स्याम सिंह राणा, बाराह खाप राखी शाहपुर, दो बार जींद में जिलास्तरीय कार्यक्रम में सम्मानित हो चुकी हैं। अपने गांव डोभ में गांव की सबसे पढ़ी-लिखी लड़की होने के चलते 26 जनवरी पर दो बार झंडा फहराने का अवसर भी मिल चुका है।

कोई भी मुकाम हासिल कर सकती हैं महिलाएं–

कुसुम कहती हैं कि अगर एक महिला अपने मन में ठान ले कि उसे जो हासिल करना है तो वह उस मंजिल को हासिल कर सकती है। जरूरत है तो सिर्फ हौसले की और पर्दा छोड़कर घर से बाहर निकलने की। आज महिलाएं किसी भी क्षेत्र में पुरुषों से पीछे नहीं हैं।

'मैं दिव्यांग होते हुए जब यहां तक पहुंच सकती हूं तो जो महिलाएं स्वस्थ हैं, वे तो कुछ भी कर सकती हैं। अब वो समय नहीं रहा कि महिलाएं सिर्फ चूल्हे–चौके तक सीमित रहें। आज घर चलाने में पुरुषों का सहयोग भी करती हैं और बच्चों को भी संभालती हैं।' कुसुम, पैरालंपिक एथलीट

लड़कों को फुटबॉल में टक्कर देती है मनीषा पहनना चाहती है टीम इण्डिया की जर्सी

सन्तकबीरनगर। चौदह साल की मनीषा विश्वकर्मा एक फुटबॉलर है। वह यूपी के सन्तकबीरनगर जिले के बनकटिया गांव की निवासी है और पिछले तीन सालों से लड़कों के साथ फुटबॉल खेल रही हैं। मनीषा का दिन सुबह के 5 बजे से ही शुरू हो जाता है। वह जरूरी कामों को जल्दी से निपटा कर अपना साइकिल उठाती है और पगडंडियों के सहारे अपने सपनों की तरफ बढ़ने लगती है। मनीषा का सपना एक बड़ा फुटबॉलर बनना है। वह इस खेल में देश का प्रतिनिधित्व करना चाहती है।

8वीं कक्षा में पढ़ने वाली मनीषा ने नेशनल गेम्स में सब जूनियर

लेवल पर अपने राज्य उत्तर प्रदेश का प्रतिनिधित्व किया है। वह जिला मुख्यालय खलीलाबाद स्थित स्टेडियम में रोज सुबह-शाम प्रैक्टिस करती है। वह पूरे स्टेडियम में बड़े गर्व से उस काले रंग की जर्सी पहनकर घूमती है, जिस पर उसका नाम और यू0पी0 लिखा है। मेडल्स के साथ मनीषा कहती है कि यह जर्सी उसके मेहनत का फल है। इसके लिए उसने बहुत संघर्ष किया है। मनीषा इस काली जर्सी के बाद टीम इण्डिया की नीले रंग की जर्सी को पहनना चाहती है। वह इसके लिए अपनी तरफ से कड़ी मेहनत भी कर रही है। सही ट्रेनिंग की कमी और संसाधनों, अवसरों का अभाव मनीषा की सफलता के रास्ते में बाधा बन रही है।

एथेलेटिक्स से शुरू किया सफर–

मनीषा को वह साल याद नहीं जब उसने फुटबॉल खेलना शुरू किया था। वह अपने दिमाग पर जोर-देकर जवाब देती है- 'करीब ढाई-तीन साल हो गए।' मनीषा बताती है कि वह शुरू से ही खेलों में अव्वल थी। पढ़ाई में उसका बिल्कुल भी मन नहीं लगता था। वह स्कूल की दौड़ प्रतियोगिताओं में भाग लेती थी और अक्सर टॉप तीन में जगह बना लेती थी। कुछ ही दिनों में मनीषा जिले की एक टॉप एथलीट बन गई।

एथलीट से फुटबॉलर बनने का सफर–

मनीषा एथलीट तो आसानी से बन गई लेकिन उसके फुटबॉलर बनने का सफर उतना ही मुश्किल रहा। उत्तर प्रदेश के ग्रामीण इलाकों में यह एक ट्रेंड सा है कि लोग खिलाड़ी बनने के लिए तो खेल को चुनते हैं लेकिन नौकरी लेकर एक जिम्मेदार घरेलू इंसान बन जाते हैं। खेल कोटे से नौकरी पाना अपेक्षाकृत आसान होता है। संसाधनों की कमी, घरेलू-सामाजिक दबाव, बढ़ती प्रतियोगिता और सही ट्रेनिंग के अभाव में

प्रतिभाएं स्थानीय स्तर पर ही दम तोड़ देती है। महिला खिलाड़ियों के साथ यह मसला और भी बढ़ जाता है। खेल के नाम पर उन्हें सिर्फ दौड़ यानी एथलेटिक्स तक ही सीमित रखने की कोशिश की जाती है। मनीषा के साथ भी शुरूआत में कुछ ऐसा ही हुआ। मनीषा बताती हैं कि स्कूल स्तर पर अच्छा प्रदर्शन करने के बाद जब वह स्टेडियम आने लगी तो उससे कहा गया कि वह एथलेटिक्स को ही चुने। जबकि मनीषा का मन फुटबॉल में लगने लगा था। इस बाबत मनीषा का अपने महिला कोच से विवाद भी हुआ। महिला कोच उसे एथलेटिक्स में ही जाने को मजबूर कर रही थी।

घर वालों का मिलता है पूरा समर्थन–

मनीषा बताती है कि शुरूआत में घर वालों को भी मनाना उसके लिए काफी मुश्किल था। घर वालों को

विश्वास ही नहीं था कि वह फुटबॉल जैसे एक फिजिकल गेम में लड़कों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खेल सकती है। लेकिन जब एक-दो बार मनीषा का नाम स्थानीय अखबारों में निकला, तो फिर घर वालों का भी विश्वास मनीषा पर बढ़ गया। इसके बाद से परिवार में मनीषा को किसी ने नहीं रोका। मनीषा के भाई संदीप ने परिवार वालों को भरोसा दिलाया कि मनीषा आगे अच्छा खेल सकती है। मनीषा का घर और उसके घर वाले जिले के ही आरटीओ विभाग में दैनिक वेतन पर काम करने वाले मनीषा के भाई संदीप विश्वकर्मा बताते हैं, 'मैंने और मेरे परिवार ने हमेशा से ही मनीषा का समर्थन किया है। उसे ट्रायल देने के लिए अक्सर ही आगरा, मेरठ, बनारस जाना पड़ता है। कई बार मैं खुद मनीषा को लेकर जाता हूं। वहीं अगर मुझे छुट्टी नहीं मिलती तो वह अकेले ही चली जाती है। इसके लिए कभी कोई भी रोक-टोक हमने नहीं किया। हां, उसके स्वास्थ्य और सुरक्षा की फिक्र जरूर बनी रहती है।'

गरीबी बन रही सफलता में बाधा–

मनीषा के पिता एक मजदूर हैं। वह मुम्बई में रहकर दैनिक मजदूरी पर बढ़ई का काम करते हैं। वहीं मनीषा के दो भाई अलग-अलग जगहों पर प्राइवेट नौकरी करते हैं। खेत के नाम पर परिवार के पास थोड़ा सी जमीन है, जिससे बमुश्किल ही गुजारा चल पाता है। मनीषा बताती है, 'ट्रायल में जाने के लिए मुझे ट्रेन का चालू (जनरल) टिकट लेकर भीड़ भरे डिब्बे में बैठकर जाना पड़ता है। फिर अगले दिन सुबह मैं ट्रायल देती हूं। जब साथ कोई महिला खिलाड़ी नहीं जाती है तो भाई जाता है। इससे उसके एक दिन के वेतन का नुकसान होता है।' मनीषा की मां बताती हैं, 'एक ट्रायल में जाने के लिए कम से कम 1000 रूपए का खर्च आता है। ट्रायल का भी पता एक-दो दिन पहले ही पता चलता है। घर में पैसा नहीं रहता है तो पास-पड़ोस से कर्ज लेकर उसे हम ट्रायल पर भेजते हैं। कई बार पास-पड़ोस वाले ताना-उलाहना भी देते हैं कि ह्यलड़की है, कहां भेज रहे।' लेकिन उसे हम लोग कभी नहीं रोकते। उससे अब हम घर का भी काम नहीं लेते। वह घर पर रहती है तो भी फुटबॉल में ही रमी रहती है। कभी अपने जूतों को साफ

करती है तो कभी चोटों को आग दिखाकर उसे सेंकती है। मनीषा की मां को दुःख है कि तीन साल से फुटबॉल खेलने पर भी उसे अब तक कोई सरकारी सहायता नहीं मिली। मिट्टी के घर को बुहारती हुई वह रिपोर्टर से कहती हैं, 'आप लोग तो पत्रकार हैं। लखनऊ-दिल्ली जाते रहते हैं। इसका भी कुछ करिये ना। इसको अब आगे खेलना है।'

खेल विभाग से नहीं मिलता है कोई वजीफा–

राज्य सरकार का नियम है कि वह किसी भी खेल में देश या राज्य स्तर पर पोडियम फिनिश (टॉप-3) करने वाले खिलाड़ियों को वह स्कॉलरशिप के जरिये मदद करती है। मनीषा ने राज्य स्तर पर उत्तर प्रदेश का प्रतिनिधित्व तो किया है लेकिन चूंकि उत्तर प्रदेश क्वार्टर फाइनल से आगे नहीं बढ़ पाई, इसलिए नियमानुसार वह किसी भी सरकारी वजीफे के योग्य नहीं है। हालांकि इस दौरान मनीषा का व्यक्तिगत खेल काफी अच्छा रहा। उसने चार मैचों में कुल छः गोल किए, जिसमें एक मैच में हैट्रिक भी शामिल था। स्टेडियम के एक कोच ने बताया कि सरकारों को ऐसी कोई व्यवस्था जरूर करनी चाहिए जिसमें स्थानीय कोच या अधिकारी के अनुसंशा (रिकमेंडेशन) पर ऐसी प्रतिभाओं को भी मदद मिले। मनीषा को स्थानीय नेताओं से भी कोई सहयोग नहीं मिलता है। हालांकि फुटबॉल खेलने वाले कुछ स्थानीय लोग मनीषा की हमेशा मदद करते रहते हैं। अभी नेशनल खेलने के बाद क्षेत्र के एक व्यापारी ने मनीषा को एक बड़े ब्राण्ड का जूता गिफ्ट किया था।

स्टेडियम और स्थानीय खिलाड़ियों से मिलता है भरपूर सहयोग–

जिले के क्रीड़ाधिकारी और फुटबॉल कोच अमित कुमार बताते हैं कि जब मनीषा पहली बार फुटबॉल खेलने के लिए आई तभी उन्हें पता लग गया कि वह एक बेहतर फुटबॉलर बन सकती है। अमित बताते हैं, 'उसके पैरों के मूवमेंट से ही पता चल गया कि वह फुटबॉल खेल सकती है। इसके अलावा उसके किक में पॉवर भी रहता है। लड़को के साथ खेलने से उसके खेल में और सुधार आया है। नेशनल खेलने के बाद वह अब बढ़े हुए आत्मविश्वास के साथ फुटबॉल खेलती है।' अमित आगे बताते हैं, 'स्टेडियम के पुरूष खिलाड़ी भी मनीषा को पूरा सहयोग करते हैं। वह भी चाहते हैं कि मनीषा और आगे बढ़े जिससे देश भर में पूरे जिले का नाम हो। उसके दुःख-सुख में घर पर भी खिलाड़ी जाते हैं। एक बार उसका एक्सीडेंट हुआ था तो भी खिलाड़ियों ने चोट से उबरने में पूरा सहयोग किया।'

नेशनल खेलने के बाद आया निराशा का दौर–

मनीषा अब तक कुल आठ से दस राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं में भाग ले चुकी है। वह सब जूनियर लेवल पर नेशनल भी खेल चुकी है। लेकिन वह अब इससे आगे बढ़ना चाहती है। मनीषा के ही शब्दों में, 'मैं सिर्फ सरकारी नौकरी के लिए ही यह गेम नहीं खेल रही हूं। मुझे अब आगे खेलना है। मैंने जब नेशनल खेला था तो मुझे लगा था कि अब चीजें आसान हो जाएंगी लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ।'

बाल बड़े होने के कारण सुननी पड़ी थी गाली–

मनीषा, ओडिशा में हुए सब जूनियर नेशनल गेम का एक किस्सा भी सुनाती है। उसने बताया कि जिस मैच में उसने हैट्रिक मारा था, उस मैच में उसका एक हेडर गोल में जाने से रूक गया। मनीषा बताती है, 'बाल बड़े होने के कारण हेडर में पॉवर नहीं आ पाया था। इसलिए गोल नहीं हो पाया। मैच के बाद टीम की महिला कोच ने मनीषा को उलाहना भी सुनाया और अपशब्द भी कहे।' मनीषा बताती है कि ऐसा उसके साथ पहली बार नहीं हुआ था।

'खेलो इण्डिया' के ट्रायल का पता ही नहीं चला–

मनीषा बताती है कि उसने नेशनल खेल में ऐसे खिलाड़ियों के साथ खेला जो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर खेल चुकी हैं। इसलिए उसे पूरा विश्वास था कि उसे पुणे के 'खेलो इण्डिया' गेम्स में भी मौका मिलेगा। लेकिन मनीषा को इस

गेम के ट्रायल का पता ही नहीं चला। मनीषा बताती है, 'जब भी कहीं ट्रायल होता है तो बनारस और अन्य क्षेत्र की लड़कियां मुझे फोन करती हैं। लेकिन खेलो इण्डिया के ट्रायल के समय मेरा फोन गायब हो गया था।' वह भावुक होकर कहती है, 'इस बारे में मुझे सर ने भी नहीं बताया।' जिला क्रीड़ाधिकारी अमित कुमार ने पूछने पर बताया कि उन्हें खुद 'खेलो इण्डिया' के ट्रायल के तारीखों की जानकारी बहुत देर से मिली थी। मनीषा को इस बात का बहुत दुःख है कि उसके हाथ से एक अच्छा मौका निकल गया। मनीषा को अब यह भी लगता है कि उसके लिए चीजें रूक सी गई हैं। वह अब किसी अच्छे एकेडमी से हाई लेवल की ट्रेनिंग चाहती है ताकि खुद को हाई लेवल फुटबॉल के लिए तैयार कर सके। लेकिन उसे इसके लिए कहीं से भी सहायता नहीं मिल रही है।

मनीषा से जब पूछा जाता है कि क्या वह कभी निराश होती है, रोती भी है? इस पर मनीषा धीमे से मुस्कुराते हुए बोलती है, 'अगर रो दूंगी, तो फिर सब खत्म ही हो जाएगा' इसके बाद वह फुटबॉल उठाकर अपने अंगुलियों पर नचाने लगती हैं।

(साभार– गांव कनेक्शन)

-विशेष अनुरोध-

प्रिय बन्धुओं, सादर विश्वकर्माभिवादन!

आप सभी जानते हैं कि ''**विश्वकर्मा किरण**'' हिन्दी साप्ताहिक पत्रिका प्रकाशन के 20वें वर्ष में चल रही है, जो समाज के अधिकांश समाचारों, विचारों और लेखों के साथ आप सभी के बीच एक पहचान बना चुकी है। पत्रिका ने समाज के हर छोटे-बड़े समाचारों, लेखकों के विचार, समाज के कवियों और साहित्यकारों को तवज्जो दिया है। अधिकांश पाठक और शुभचिन्तक यह अच्छी तरह जानते हैं कि समाचारपत्र अथवा पत्रिका प्रकाशन का कार्य बहुत ही कठिन है। प्रकाशन में बहुत खर्च आता है जिसका संकलन बहुत ही कठिनाई से हो पाता है, इन्हीं परिस्थितियों में कभी-कभार प्रकाशन बाधित भी हो जाता है। प्रकाशन बिना आप सभी के सहयोग के नहीं चल सकता। आप सभी से अनुरोध है कि सदस्यता के अलावा भी समय-समय पर यथासम्भव पत्रिका का आर्थिक सहयोग करते रहें जिससे प्रकाशन निर्बाध रूप से चलता रहे।

सहयोग राशि इस खाते में जमा करें-

Account Name	:	VISHWAKARMA KIRAN
Account No.	:	4504002100003269
Bank Name	:	PUNJAB NATIONAL BANK
Branch	:	SHAHGANJ, JAUNPUR (U.P.)
IFSC Code	:	PUNB0450400

ओ३म श्री विश्वकर्मा जी महाविद्यालय

प्रकाश विहार, वारनपुर, कहिंजरी, कानपुर देहात

(चौबेपुर से बेला मार्ग पर स्थित)

डा0 ओ0पी0 विश्वकर्मा
प्रबन्धक
मो0: 9415483052

♦कला संकाय♦विज्ञान संकाय♦बी0टी0सी0 प्रयासरत♦

Website: www.ovsm.org E-mail: info@ovsm.org सम्पर्क सूत्र: 9935274607, 9415483052

विगत 33 वर्षों से आपकी सेवा में सदैव तत्पर

प्रकाश नर्सिंग होम

डा0 ओ0पी0 विश्वकर्मा
बीएएमएस, पीएचडी, एलएलबी
मो0: 9415483052
डा0 आशुतोष विश्वकर्मा
एमएससी, बीएएमएस
मो0: 9450352647

-:सुविधाएं:-

आकस्मिक सेवाएं 24 घण्टा उपलब्ध
चौबेपुर रेलवे स्टेशन के नजदीक
खुले वातावरण में स्थापित
एम्बुलेंस, मेडिकल स्टोर, एक्स-रे
पैथोलाजी, आक्सीजन एवं सभी प्रकार के
आपरेशन की सुविधा उपलब्ध

पता-
प्रकाश नगर, जी0टी0 रोड
चौबेपुर, कानपुर नगर

R.N.I. No.- UPHIN/2000/01157

मनु, मय, त्वष्टा, शिल्पी, दैवज्ञ
ये पाँचो सर्वज्ञ

UNITED WE STAND
DIVIDED WILL FALL

विभाजित होकर गिरने से अच्छा है
संयुक्त होकर खड़े रहना

आईये विश्वकर्मा समाज को बेहतर से बेहतरीन बनाएं

विश्वकर्मा समाज डॉट कॉम से
जुड़ने के लिए आज ही रजिस्टर करें

www.VishwakarmaSamaj.com

विश्वकर्मा समाज
a generation awareness

अनिल विश्वकर्मा (फाउंडर)
09869866137

सभी विश्वकर्मा वंशियों को हार्दिक शुभकामनाएं